

व्यक्तिगत जन्मकुंडली रिपोर्ट



ॐ श्री गणेशाय नमः

ॐ

MyAstrology

भारत का विश्वसनीय वैदिक ज्योतिष केंद्र

जन्मकुंडली विश्लेषण

पूर्व भारतीय वैदिक पद्धति

लाहिड़ी अयनांश • VSOP87 सटीक ग्रह गणना

— जातक / जातिका का विवरण —

Rudra

जन्म: 31/10/1986 | समय: 23:59 | स्थान: Ranaghat

लग्न: कर्क

राशि: कन्या

नक्षत्र: चित्रा

डॉ. प्रद्युत आचार्य

PhD in Vedic Jyotish • 15+ वर्षों का अनुभव

राणाघाट, नदिया, पश्चिम बंगाल - 741202

★★★★★
314+ सत्यापित समीक्षाएँ

YouTube
2.24 लाख सब्सक्राइबर

+91-93331-22768 | myastrology.in

॥ ॐ नमः शिवाय ॥



नवग्रह स्तोत्रम्

नवग्रहों की वंदना एवं मंत्र

1. सूर्य

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

अर्थ: जपा पुष्प के समान रक्तवर्ण सूर्यदेव को प्रणाम।

2. चंद्र

दिव्यशङ्खतुषाराभं क्षीरोदारवसम्भवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥

अर्थ: शिव के मुकुट के आभूषण चंद्रदेव को प्रणाम।

3. मंगल

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्पुञ्जसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तञ्च लोहिताङ्गं नमाम्यहम्॥

अर्थ: शक्तिधारी लोहितांग मंगल को प्रणाम।

4. बुध

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सर्वगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

अर्थ: सर्वगुणसंपन्न बुधदेव को प्रणाम।

6. शुक्र

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

अर्थ: सर्वशास्त्रज्ञ भार्गव शुक्र को प्रणाम।

7. शनि

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायागर्भसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

अर्थ: सूर्यपुत्र शनिदेव को प्रणाम।

8. राहु

अर्धकायं महावीरं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥

अर्थ: महावीर सिंहिकापुत्र राहु को प्रणाम।

9. केतु

पलाशपुष्पसङ्काशं ताराग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

अर्थ: रुद्रस्वरूप भयंकर केतु को प्रणाम।

5. बृहस्पति

देवतानामृषीणाञ्च गुरुं कनकसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥

अर्थ: देवगुरु बृहस्पति को प्रणाम।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सर्वे भवन्तु सुखिनः

— जन्मदिन का पंचांग एवं कुंडली विवरण —

विस्तृत पंचांग एवं जातक परिचय

* सूर्योदय
05:44

सूर्यास्त
16:54

जातक परिचय विवरण
लाहिड़ी अयनांश पद्धति से गणित

तिथि	कृष्ण चतुर्दशी	जातक का नाम	Rudra
नक्षत्र	चित्रा — 1वाँ पाद	जन्म दिनांक	31/10/1986
नक्षत्र अधिपति	मंगल	जन्म समय	23:59
योग	विष्कुम्भ	लिंग	पुरुष
करण	विष्टि	वर्तमान आयु	39 वर्ष 12 माह
गण	राक्षस	जन्म स्थान	Ranaghat
वर्ण	वैश्य	अक्षांश-देशांतर	23.1677° N, 88.5808° E
बांग्ला माह	कार्तिक	लग्न	कर्क
अंग्रेज़ी माह	October	लग्न अधिपति	चंद्र
जन्म राशि	कन्या	गुलिक लग्न	सिंह 8°46' - २रा भाव
राशि अधिपति	बुध	➡ जन्मकालीन दशा विवरण	
सूर्य राशि	तुला	जन्म महादशा	मंगल महादशा
हिन्दू वार	शुक्रवार	दशा शेष	6 वर्ष 5 माह
अंग्रेज़ी वार	Friday	वर्तमान दशा	बृहस्पति - राहु
मांदि लग्न	सिंह 4°26' - २रा भाव	गणना मॉडल	लाहिड़ी (Chitra-Paksha)

द्वितीय में गुलिक: ग्रंथ के अनुसार धनाभाव और व्यसनो (नशा, व्यर्थ भ्रमण आदि) की ओर झुकाव का संकेत।
आज की भाषा में — बचत में अनुशासन और नशा, जुआ व अपव्यय से दूरी यहाँ सबसे ज़रूरी है।

लाहिड़ी अयनांश पद्धति से सटीक गणित



स्वस्तिक



ॐ श्री गणेशाय नमः
विघ्नहर्ता श्री गणेश के चरणों में प्रणाम
समस्त ग्रहदोष नाशक · शुभ सिद्धि प्रदायक
ॐ श्री गणेशाय नमः



ॐकार

		राहु ²⁷ बृह ^{24^R}
लग्न	राशि चक्र	मंग ²²
चंद्र ¹⁴ केतु ¹⁴	रवि ¹⁵ शुक्र ^{16^R}	बुध ¹⁷ शनि ¹⁷

मंग	शुक्र	बृह लग्न रवि राहु
	नवांश चक्र	
चंद्र बुध केतु		शनि★

1-27 = जन्म नक्षत्र संख्या · ^R = वक्री (Retrograde) ग्रह · ★ = वर्गोत्तम ग्रह (D1=D9)

🌐 ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र (पद)	भाव
लग्न	कर्क	26°02'48"	आश्लेषा 3रा पाद	1
सूर्य	तुला	14°21'59"	स्वाती 3रा पाद	4
चंद्र	कन्या	24°30'30"	चित्रा 1वाँ पाद	3
मंगल	मकर	19°45'13"	श्रवण 3रा पाद	7
बुध	वृश्चिक	5°20'27"	अनुराधा 1वाँ पाद	5
बृहस्पति ^R	कुंभ	19°23'50"	शतभिषा 4था पाद	8
शुक्र ^R	तुला	21°47'14"	विशाखा 1वाँ पाद	4
शनि	वृश्चिक	14°38'16"	अनुराधा 4था पाद	5
राहु	मीन	26°04'01"	रेवती 3रा पाद	9
केतु	कन्या	26°04'01"	चित्रा 1वाँ पाद	3

🔍 ग्रह दृष्टि एवं शत्रु-मित्र

ग्रह	भाव	दृष्ट भाव	दृष्टि ग्रह	मित्र	शत्रु
सूर्य	4	10	—	चंद्र, मंगल, बृहस्पति	शुक्र, शनि
चंद्र	3	9	राहु	सूर्य, बुध	—
मंगल	7	10, 1, 2	—	सूर्य, चंद्र, बृहस्पति	बुध
बुध	5	11	—	सूर्य, शुक्र	चंद्र
बृहस्पति	8	12, 2, 4	सूर्य, शुक्र	सूर्य, चंद्र, मंगल	बुध, शुक्र
शुक्र	4	10	—	बुध, शनि	सूर्य, चंद्र
शनि	5	7, 11, 2	मंगल	बुध, शुक्र	सूर्य, चंद्र, मंगल
राहु	9	1, 3, 5	चंद्र, बुध, शनि, केतु	शुक्र, शनि	सूर्य, मंगल, चंद्र
केतु	3	7, 9, 11	मंगल, राहु	सूर्य, चंद्र, मंगल	शुक्र, शनि

पंचधा मैत्री चक्र

नैसर्गिक संबंध और जन्मकुंडली में तात्कालिक स्थिति को मिलाकर ग्रहों का अंतिम संबंध। बाईं ओर के ग्रह की दृष्टि से ऊपर वाला ग्रह।

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
सूर्य	—	अधिमित्र	अधिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अधिमित्र	—	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	अधिमित्र	सम	—	सम	अधिमित्र	मित्र	मित्र
बुध	अधिमित्र	सम	मित्र	—	मित्र	अधिमित्र	शत्रु
बृहस्पति	सम	सम	अधिमित्र	सम	—	अधिशत्रु	मित्र
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	—	अधिमित्र
शनि	सम	सम	सम	सम	मित्र	अधिमित्र	—

★ लग्न एवं जन्म विवरण सारांश

लग्न राशि

कर्क

चंद्र राशि

कन्या

जन्म नक्षत्र

चित्रा

वर्तमान विंशोत्तरी दशा — अवधि एवं प्रगति

महादशा

बृहस्पति

20/03/2011 – 20/03/2027

97%

कुल: 16 वर्ष · व्यतीत: 15.5 वर्ष · शेष: 0.5 वर्ष

अंतर्दशा

राहु

24/10/2024 – 20/03/2027

81%

कुल: 2.4 वर्ष · व्यतीत: 1.95 वर्ष · शेष: 0.45 वर्ष

प्रत्यंतर्दशा

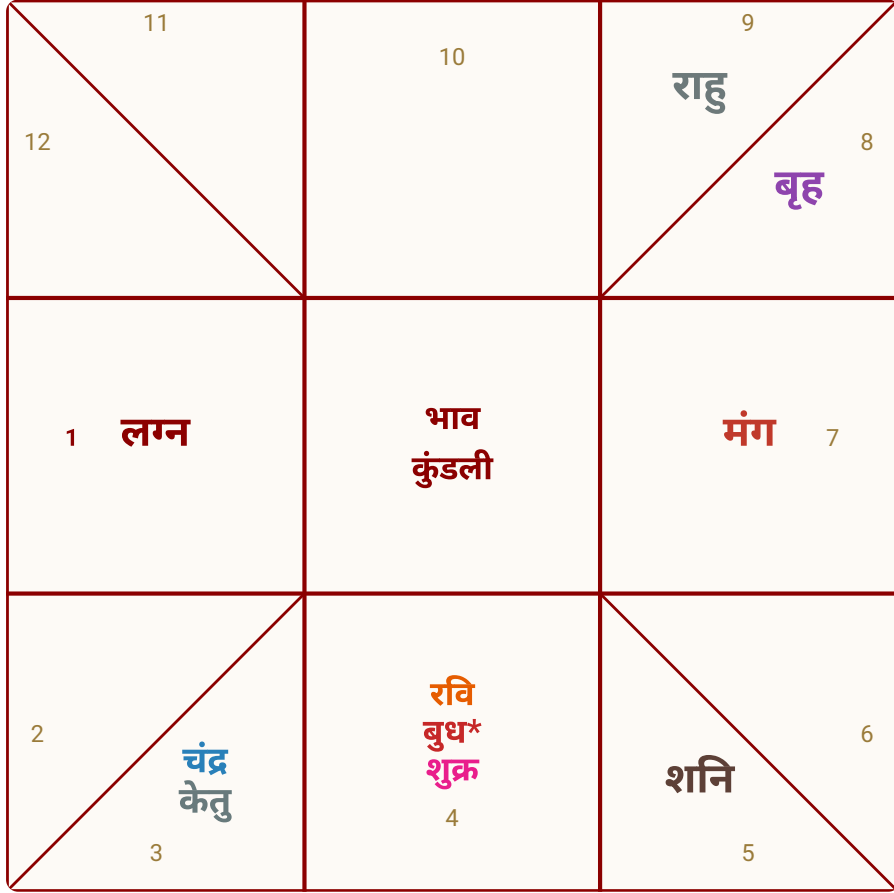
सूर्य

अवधि: 0.12 वर्ष

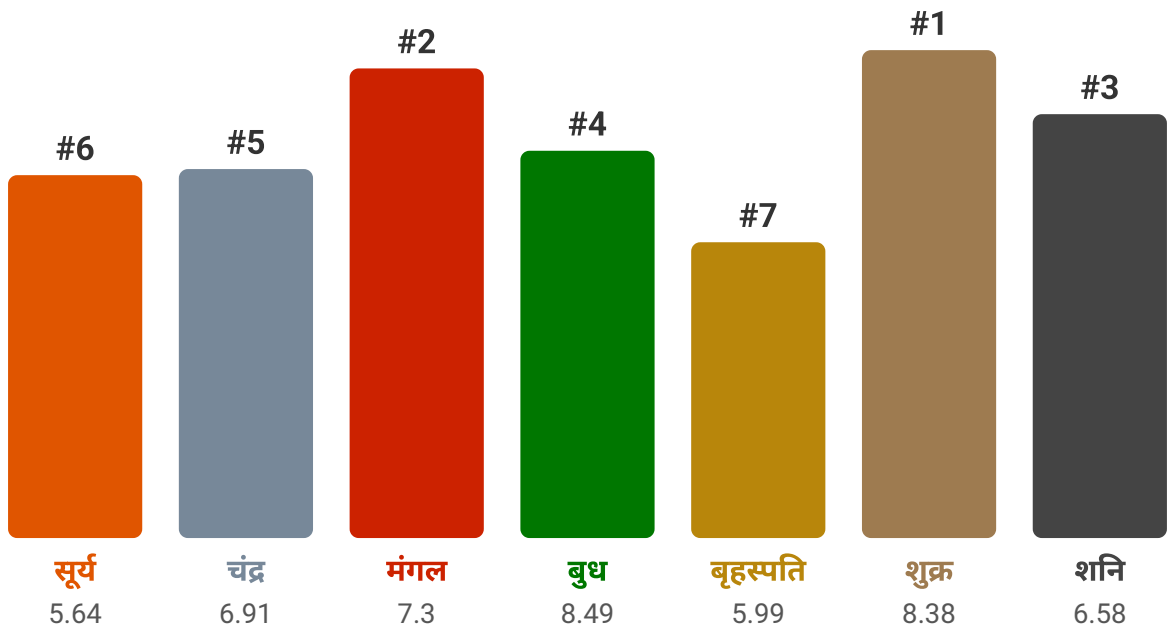
8%

व्यतीत: 0.01 वर्ष · शेष: 0.11 वर्ष

भाव चलित कुण्डली



षड्बल शक्ति चित्र



ग्रह	राशि भाव	भाव चलित	परिवर्तन
सूर्य	4वाँ भाव	4वाँ भाव	—
चंद्र	3वाँ भाव	3वाँ भाव	—
मंगल	7वाँ भाव	7वाँ भाव	—
बुध	5वाँ भाव	4वाँ भाव	✓ परिवर्तित
बृहस्पति	8वाँ भाव	8वाँ भाव	—
शुक्र	4वाँ भाव	4वाँ भाव	—
शनि	5वाँ भाव	5वाँ भाव	—
राहु	9वाँ भाव	9वाँ भाव	—
केतु	3वाँ भाव	3वाँ भाव	—

⚠ भाव चलित कुंडली में 1 ग्रह का भाव बदल गया है। भावफल के विचार में भाव चलित कुंडली के भाव को ही प्रधानता दी जाती है।

⚡ षड्बल (ग्रहों की शक्ति)

ग्रह	स्थान बल	दिक् बल	काल बल	चेष्टा बल	नैसर्गिक	दृक् बल	कुल रूप	न्यूनतम रूपा	अनुपात	शक्ति
सूर्य	160.83	3.34	110.72	0.00	60.00	3.71	5.64	5	1.13	मध्यम
चंद्र	200.33	50.04	108.98	0.00	51.43	3.71	6.91	6	1.15	बलवान
मंगल	267.25	28.46	118.68	37.93	17.14	-31.56	7.30	5	1.46	अत्यंत बलवान
बुध	211.97	26.90	183.85	50.91	25.71	9.85	8.49	7	1.21	बलवान
बृहस्पति	142.30	7.78	151.47	43.26	34.29	-19.87	5.99	6.5	0.92	दुर्बल
शुक्र	207.01	59.13	123.90	58.61	42.86	11.21	8.38	5.5	1.52	अत्यंत बलवान
शनि	164.29	36.20	167.60	9.22	8.57	8.66	6.58	5	1.32	बलवान

षड्बल की गणना बी. वी. रमन के ग्रंथ *Graha and Bhava Balas* की पद्धति से — सप्तवर्गज, कालबल के नौ भाग, चेष्टा और दृक् बल सहित; ग्रंथ की उदाहरण-कुंडली की हर संख्या से मिलाकर जाँची गई। "अनुपात" = कुल रूपा ÷ ग्रह की न्यूनतम आवश्यकता; 1 या अधिक होने पर रमन के अनुसार ग्रह बलवान है।

🏠 ग्रहों का भाव फलादेश

सूर्य – तुला (4वाँ भाव)

आपके चतुर्थ भाव में सूर्य का आगमन हुआ है। यह भाव माता, मन, सुख एवं वाहन का प्रतीक है। सूर्य की यह स्थिति आपके पारिवारिक जीवन को गरिमापूर्ण बनाएगी और आप सुंदर घर एवं वाहन के स्वामी होंगे। किंतु सूर्य यहाँ कुछ दुर्बल अनुभव करते हैं; इसलिए मानसिक शांति खोज पाना आपके लिए थोड़ा कठिन हो सकता है। आपके भीतर एक प्रकार की अस्थिरता काम करेगी। माता के साथ संबंध अच्छा होते हुए भी वे कुछ कठोर अथवा प्रभावशाली हो सकती हैं। यदि आप अपने आवेग पर नियंत्रण रख सकें और परिवार के सबके मत का सम्मान करना सीख लें, तभी इस स्थिति का पूर्ण शुभ फल प्राप्त कर सकेंगे। स्मरण रखें, घर शांति का स्थान है, युद्धक्षेत्र नहीं।

चंद्र – कन्या (3वाँ भाव)

आपके तृतीय भाव में चंद्रमा अपनी शीतल किरणें बिखेर रहे हैं। तृतीय भाव पराक्रम, भाई-बहन एवं संवाद का क्षेत्र है। इस स्थिति से आप अत्यंत कल्पनाशील एवं सृजनशील होंगे। अपनी लेखनी अथवा वाणी से आप सहज ही लोगों के मन को छू सकते हैं। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अत्यंत आत्मीय एवं घनिष्ठ रहेगा और उनसे आपको मानसिक संबल मिलेगा। आपको छोटी-छोटी यात्राएँ प्रिय होंगी और वे यात्राएँ आपके मन पर गहरा प्रभाव छोड़ेंगी। किंतु यह भावुकता कभी-कभी आपको भीरु अथवा निर्णयहीन बना सकती है। स्मरण रखें, जीवन साहस के साथ आगे बढ़ने के लिए ही है। अपनी कल्पना को काम में लगाएँ, उससे भयभीत न हों।

मंगल – मकर (7वाँ भाव)

आपके सप्तम भाव में मंगल अपनी तीव्र उपस्थिति जता रहे हैं। सप्तम भाव दांपत्य एवं साझेदारी का स्थान है। ज्योतिष में इसे 'मांगलिक दोष' कहा जाता है, जो वैवाहिक जीवन में कुछ चुनौतियों का संकेत देता है। आपका जीवनसाथी अत्यंत साहसी, तेजस्वी एवं कुछ क्रोधी प्रकृति का होगा। आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा, किंतु संबंध को टिकाए रखने के लिए आपको अपना अहंकार एवं हठ बहुत कुछ छोड़ना होगा। संबंध के प्रथम कुछ वर्ष काफ़ी झंझावात में बीत सकते हैं। किंतु धैर्यपूर्वक चलें तो धीरे-धीरे परिस्थिति सामान्य हो आएगी। स्मरण रखें, विवाह समझौते का ही दूसरा नाम है। इसे युद्धक्षेत्र न बनाएँ।

बुध — वृश्चिक (भाव चलित 4 · राशि-भाव 5)

आपके चतुर्थ भाव में बुध अपनी बुद्धि का प्रकाश लेकर उपस्थित हुए हैं। चतुर्थ भाव माता, मन, सुख एवं घर के वातावरण का संकेत देता है। इस स्थिति से आप एक बुद्धिदीप्त पारिवारिक परिवेश में बड़े होंगे। आपकी माता अत्यंत बुद्धिमती एवं आधुनिक विचारों की होंगी। आपके घर में पुस्तक एवं ज्ञान का समारोह रहेगा। आप स्वयं भी घर सजाना पसंद करेंगे, किंतु आपकी सजावट सुव्यवस्थित एवं व्यावहारिक होगी। आपके मन में सदैव हज़ारों विचारों का आना-जाना लगा रहेगा, जो कभी-कभी आपको अस्थिर कर सकता है। मानसिक शांति के लिए आप एकांत चाहेंगे, फिर लोगों के बीच भी दौड़ना चाहेंगे। यह द्वंद्व आपको थका सकता है। स्मरण रखें, मन की स्थिरता ही वास्तविक सुख है। प्रतिदिन कुछ समय ध्यान अथवा मौन में बिताने का अभ्यास करें।

बृहस्पति — कुंभ (8वाँ भाव)

आपके अष्टम भाव में बृहस्पति जीवन के रहस्यमय एवं गहन अध्यायों पर ज्ञान का प्रकाश डालने आए हैं। अष्टम भाव आकस्मिक घटना एवं गुप्त ज्ञान का स्थान है। इस स्थिति से आपकी ज्ञान-पिपासा केवल बाह्य जगत् तक सीमित नहीं रहेगी; आप मृत्यु, परलोक के रहस्य, तंत्र, ज्योतिष एवं अध्यात्म की गहराई में उतरना चाहेंगे। आप इन समस्त गुप्त विद्याओं में पारंगत हो सकते हैं। उत्तराधिकार से संपत्ति मिल सकती है। किंतु बृहस्पति यहाँ कुछ दुर्बल हैं, अतः अकस्मात् आर्थिक हानि अथवा गुप्त शत्रु का भय रह सकता है। यह स्थिति आपको सिखाएगी कि जगत् जो दिखाता है, उससे कहीं अधिक गहरा एवं रहस्यमय है। आपका यह ज्ञान कभी ग़लत मार्ग पर न चले। सत्य एवं न्याय को थामे रहें, तभी आपका ज्ञान आपको मुक्ति देगा।

शुक्र — तुला (4वाँ भाव)

आपके चतुर्थ भाव में शुक्र आपकी माता, मन एवं गृहस्थी के जगत् में स्वर्गीय सुख लेकर आए हैं। चतुर्थ भाव में शुक्र अत्यंत बलवान हैं, क्योंकि यह शुक्र के दिग्बल का स्थान है (उत्तर दिशा)। इस स्थिति से आपकी माता परम सुंदरी, स्नेहमयी एवं कलाप्रेमी होंगी। आपका बचपन वैभव एवं कला के वातावरण में बीतेगा। आपका मन शांत, प्रेममय एवं सुख की स्मृतियों से भरा रहेगा। आप सुंदर घर, मूल्यवान वाहन एवं सभी प्रकार के वैभव के स्वामी होंगे। आपका घर एक कलाकार के निपुण हाथों से सजा रहेगा। यह स्थिति इतनी शुभ है कि यह आपको जीवन के लगभग सभी दुःखों से दूर रखेगी। आप सांसारिक सुख से आजीवन भरपूर रहेंगे।

शनि — वृश्चिक (5वाँ भाव)

आपके पंचम भाव में शनि ने आपकी बुद्धि, प्रेम एवं संतान के जगत् में अनुशासन एवं संयम का बाँध बाँधा है। पंचम भाव विद्या एवं संतान का स्थान है। इस स्थिति से आपकी बुद्धि गहरी, किंतु धीमी होगी। आप सहज ही कुछ आत्मसात न कर पाएँ, किंतु एक बार जो सीख लेंगे, वह आजीवन स्मरण रहेगा। प्रेम के क्षेत्र में आप बिल्कुल भी प्रदर्शनप्रिय नहीं; आप मौन प्रेम करते हैं और प्रेम को थामे रखना जानते हैं। संतान आने में विलंब हो सकता है, अथवा संतान के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ सकता है। आपकी संतानें दायित्वशील होंगी, किंतु उन्हें आपसे स्नेह से अधिक अनुशासन मिलेगा। स्मरण रखें, संतान पुष्प के समान कोमल है। उन्हें अनुशासन दें, किंतु प्रेम का जल देना न भूलें। अन्यथा वे आपसे दूर हट सकते हैं।

राहु – मीन (9वाँ भाव)

आपके नवम भाव में राहु ने आपके भाग्य, धर्म एवं उच्च शिक्षा के जगत् में अप्रचलित मार्ग का संधान दिया है। इस स्थिति से आपकी धार्मिक आस्था पूर्णतः अपनी होगी; आप किसी प्रथागत धर्म अथवा गुरु को सहज स्वीकार नहीं कर पाएँगे। आप विदेश यात्रा करेंगे और वहाँ की संस्कृति आपको गहराई से प्रभावित करेगी। पिता के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा; आप उन्हें एक कठोर शासक के रूप में देख सकते हैं, जिनके नियम तोड़ना आपको प्रिय है। आपका भाग्य आपको अकेले चलना सिखाएगा। यदि आप सचमुच किसी गुरु की खोज करें, तो वे अत्यंत कठोर एवं अप्रचलित मार्ग के पथिक होंगे। सावधान – आपका विद्रोह अंधा न हो।

केतु – कन्या (3वाँ भाव)

आपके तृतीय भाव में केतु ने आपके पराक्रम, भाई-बहन एवं संवाद के जगत् में एक गहन नीरवता ला दी है। आप स्वभाव से कम बोलेंगे, किंतु जब बोलेंगे तब आपका प्रत्येक शब्द बाण के समान सीधा एवं लक्ष्य पर अचूक होगा। आपकी लेखनी अत्यंत सशक्त होगी। भाई-बहनों से संबंध या तो अत्यंत घनिष्ठ होगा, या पूर्णतः विच्छिन्न; यहाँ कोई मध्यम स्थिति नहीं। आप छोटी-छोटी यात्राएँ कर सकते हैं, किंतु वे आध्यात्मिक उद्देश्य से अथवा एकांत की खोज में होंगी। आपका साहस निस्पृह होगा; आप विपत्ति से डरते नहीं, बल्कि उसकी उपेक्षा करते हैं। समाज की दृष्टि में यही निर्लिप्तता आपका सबसे बड़ा रहस्य है।

☪ ग्रह युति एवं दृष्टि फलादेश

ग्रह युति फलादेश

सूर्य + शुक्र (अंतर: 7.4°)

युति का प्रभाव: सूर्य के साथ शुक्र की युति — दो शत्रु ग्रहों के मिलन से भोग और अधिकार का द्वंद्व चलेगा। विलासिता और दायित्व के बीच संतुलन रखना होगा।

चंद्र + केतु (अंतर: 1.6°)

युति का प्रभाव: चंद्र के साथ केतु की युति — भावना की गहराई बढ़ेगी, पर संसार के प्रति वैराग्य भी आएगा। आत्म-अनुभूति के लिए यह उत्तम समय है।

ग्रह दृष्टि फलादेश

चंद्र → राहु (सातवें दृष्टि)

दृष्टि का प्रभाव: चंद्र आपके राहु को देख रहे हैं — मन में अस्थिरता और भ्रम का प्रभाव, किसी सच्चे सलाहकार की सहायता लीजिए।

बृहस्पति → सूर्य (नवें दृष्टि)

दृष्टि का प्रभाव: बृहस्पति आपके सूर्य को शुभ दृष्टि से देख रहे हैं — अत्यंत मंगलकारी। ज्ञान, धर्मबोध और सौभाग्य बढ़ेगा।

बृहस्पति → बुध (नवें दृष्टि)

दृष्टि का प्रभाव: बृहस्पति आपके बुध को शुभ दृष्टि से देख रहे हैं — बुद्धि और ज्ञान के मेल से आप प्रज्ञावान बनेंगे।

बृहस्पति → शुक्र (नवें दृष्टि)

दृष्टि का प्रभाव: बृहस्पति आपके शुक्र को शुभ दृष्टि से देख रहे हैं — भोग सीमा न लाँचे, ज्ञान का प्रकाश मार्ग दिखाएगा।

शनि → मंगल (तीसरे दृष्टि)

दृष्टि का प्रभाव: शनि आपके मंगल को देख रहे हैं — गति घटेगी, बाधा आएगी। पर यही धीमापन आपको परिपक्व बनाएगा।

राहु → चंद्र (सातवें दृष्टि)

दृष्टि का प्रभाव: राहु आपके चंद्र को देख रहे हैं — मन पर माया का जाल और अस्थिरता; यथार्थ और स्वप्न में संतुलन रखिए।

राहु → **शनि** (नवें दृष्टि)

दृष्टि का प्रभाव: राहु आपके शनि को देख रहे हैं — दुगुनी कार्मिक बाधा; कठोर परिश्रम कीजिए — बचकर निकलने की कोशिश उलटी पड़ेगी।

केतु → **मंगल** (पाँचवें दृष्टि)

दृष्टि का प्रभाव: केतु आपके मंगल को देख रहे हैं — तीक्ष्ण कर्मशक्ति पर फल के प्रति निर्लिप्तता, साहसी कर्मयोग।

⚠ मांगलिक एवं कालसर्प दोष विचार

मांगलिक दोष एवं कालसर्प योग को लेकर अनावश्यक भय की आवश्यकता नहीं। उचित उपाय एवं विचार से यह दोष सहज ही निवारणीय है।

⚠ मांगलिक दोष है

लग्न कुंडली में मंगल आपके **सप्तम (7वाँ) भाव में** – यह मांगलिक भाव है।

सप्तम भाव में मंगल – दांपत्य में कलह, विवाह-विच्छेद की आशंका।

चंद्र कुंडली में मंगल **पंचम (5वाँ) भाव में** – यह मांगलिक भाव नहीं है।

प्रभाव: विवाह में विलंब, दांपत्य कलह एवं संबंध में तनाव की आशंका रहती है। किंतु मांगलिक दोष होने पर मांगलिक वर/वधू से विवाह करने पर दोष परस्पर निरस्त हो जाता है।

उपाय:

- प्रत्येक मंगलवार हनुमान जी की पूजा एवं सुंदरकांड का पाठ
- मंगलवार को उपवास अथवा लाल मसूर दाल का दान
- विवाह से पूर्व कुंभविवाह अथवा विष्णु विवाह संस्कार
- 7 मुखी रुद्राक्ष धारण (मंगल की शांति हेतु)
- मूंगा (Red Coral) रत्न धारण – विशेषज्ञ की सलाह से

✓ कालसर्प योग नहीं

आपके राशि चक्र में **कालसर्प योग नहीं है** – समस्त ग्रह राहु-केतु अक्ष के बाहर स्वच्छंद विचरण कर रहे हैं। आप इस दोष से पूर्णतः मुक्त हैं।

🌐 शनि की साढ़ेसाती (Sade Sati)

जब शनि जन्म-चंद्र राशि से 12वीं (उदय), उसी राशि (शिखर) एवं 2री (अस्त) राशि में गोचर करता है, तब साढ़ेसाती (साढ़े सात वर्ष) सक्रिय रहती है। जन्म के बाद 100 वर्षों की अनुमानित गणना नीचे दी गई है।

✓ वर्तमान में शनि की साढ़ेसाती नहीं चल रही

अगली साढ़ेसाती ('उदय' चरण) आरंभ होगी लगभग **08-09-2036** को।

① 2006 – 2014

क्र.	चरण	राशि	आरंभ	समाप्ति
1	उदय	सिंह	15-11-2006	30-12-2006
2	उदय	सिंह	28-07-2007	31-08-2009
3	शिखर	कन्या	15-09-2009	04-11-2011
4	अस्त	तुला	19-11-2011	02-05-2012
5	शिखर	कन्या	17-05-2012	31-07-2012
6	अस्त	तुला	15-08-2012	19-10-2014

② 2036 – 2044

क्र.	चरण	राशि	आरंभ	समाप्ति
7	उदय	सिंह	08-09-2036	13-10-2038
8	शिखर	कन्या	28-10-2038	27-03-2039
9	उदय	सिंह	11-04-2039	10-07-2039
10	शिखर	कन्या	25-07-2039	15-01-2041
11	अस्त	तुला	30-01-2041	30-01-2041
12	शिखर	कन्या	14-02-2041	12-09-2041
13	अस्त	तुला	27-09-2041	01-12-2043
14	अस्त	तुला	28-06-2044	27-08-2044

③ 2065 – 2073

क्र.	चरण	राशि	आरंभ	समाप्ति
15	उदय	सिंह	21-10-2065	19-01-2066
16	उदय	सिंह	03-07-2066	21-08-2068
17	शिखर	कन्या	05-09-2068	25-10-2070
18	अस्त	तुला	09-11-2070	27-01-2073
19	अस्त	तुला	12-04-2073	09-10-2073

कुंडली के योगों का विश्लेषण

Astrological Yoga Analysis

✧ कुंडली के योग

कर्क लग्न — ग्रहों की कार्यगत प्रकृति एवं मारक

अकेले ही राजयोगकारक: मंगल · मुख्य मारक: शनि

ग्रह	कार्यगत प्रकृति	स्थिति	शक्ति (षड्बल)	विशेष भूमिका
सूर्य	सामान्य	चौथे भाव	मध्यम (5.64)	—
चंद्र	सामान्य	तीसरे भाव	बलवान (6.91)	—
मंगल	शुभ	सातवें भाव	अत्यंत बलवान (7.30)	योगकारक
बुध	पाप	पाँचवें भाव	बलवान (8.49)	—
बृहस्पति	शुभ	आठवें भाव	दुर्बल (5.99)	—
शुक्र	पाप	चौथे भाव	अत्यंत बलवान (8.38)	—
शनि	सामान्य	पाँचवें भाव	बलवान (6.58)	मारक

शास्त्रीय टिप्पणी: मंगल अकेले ही राजयोगकारक; शनि मुख्य मारक; सूर्य मारक-तुल्य हो सकता है।

योग का नाम	प्रकार	प्रकृति	ग्रहबल	विवरण
रुचक योग	पंचमहापुरुष	शुभ	✓ बलवान	मंगल केंद्र में (सप्तम भाव), उच्च राशि में
मालव्य योग	पंचमहापुरुष	शुभ	✓ बलवान	शुक्र केंद्र में (चतुर्थ भाव), स्वराशि में
योग कारक	राज	शुभ	✓ बलवान	मंगल केंद्र एवं त्रिकोण दोनों का अधिपति — सातवें भाव में उच्च राशि में
परिवर्तन राज योग	राज	शुभ	✓ बलवान	शनि ↔ मंगल राशि-परिवर्तन (केंद्र-त्रिकोण स्वामी)
हर्ष योग	विपरीत राज	शुभ	⚠ दुर्बल	षष्ठ भावेश बृहस्पति हानिकारक भाव में (अष्टम) — परोक्ष सुफल

योग का नाम	प्रकार	प्रकृति	ग्रहबल	विवरण
नीचभंग राज योग	राज	शुभ	✓ बलवान	सूर्य नीच है, किंतु नीचभंग हो रहा है – शुक्र केंद्र में, मंगल केंद्र में
सुनफा योग	चंद्र	शुभ	✓ बलवान	चंद्र से द्वितीय में शुक्र – समृद्धि एवं प्रभाव
मांगलिक दोष	दोष	अशुभ	✓ बलवान	मंगल लग्न से सप्तम एवं चंद्र से पंचम भाव में – विवाह में सावधानी आवश्यक, विस्तार दोष अनुभाग में देखें
प्रियामृति योग	भावपति	अशुभ	✓ बलवान	सप्तम भावेश शनि एवं अष्टम भावेश शनि – एक ही ग्रह दोनों भावों का स्वामी · दांपत्य एवं स्वास्थ्य में विघ्न – सावधानी आवश्यक

ग्रहबल निर्देशिका: शास्त्रानुसार योगकारक ग्रह **बलवान** (✓) होने पर शुभ योग पूर्ण फल देता है; **दुर्बल** (△) होने पर फल सीमित। अशुभ योग में बलवान ग्रह का अर्थ है अधिक सावधानी। (षड्बल आधारित)

❏ वर्ग चार्ट विश्लेषण

D-2 होरा (धन)

बुध बृह शुक्र शनि	होरा D-2	
लग्न रवि चंद्र	मंग राहु केतु	

D-7 सप्तमांश (संतान)

बुध बृह		शुक्र राहु
लग्न	सप्तमांश D-7	रवि
चंद्र शनि	केतु	मंग

D-10 दशमांश (कर्म)

शुक्र		मंग रवि
राहु	दशमांश D-10	चंद्र केतु
बुध बृह		लग्न शनि

D-12 द्वादशांश (माता-पिता)

लग्न	शनि	रवि
चंद्र शुक्र	केतु	द्वादशांश D-12
मंग बृह		बुध राहु

☪ सभी वर्ग चार्ट में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	D-1 राशि	D-2 राशि	D-7 राशि	D-9 राशि	D-10 राशि	D-12 राशि
लग्न	कर्क	सिंह	कर्क	कुंभ	वृश्चिक	वृषभ
सूर्य	तुला	सिंह	मकर	कुंभ	कुंभ	मीन
चंद्र	कन्या	सिंह	सिंह	सिंह	मकर	मिथुन
मंगल	मकर	सिंह	वृश्चिक	मिथुन	मीन	सिंह
बुध	वृश्चिक	कर्क	मिथुन	सिंह	सिंह	मकर
बृहस्पति	कुंभ	कर्क	मिथुन	मीन	सिंह	कन्या
शुक्र	तुला	कर्क	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन
शनि	वृश्चिक	कर्क	सिंह	वृश्चिक	वृश्चिक	मेष
राहु	मीन	सिंह	मीन	कुंभ	कर्क	मकर
केतु	कन्या	सिंह	कन्या	सिंह	मकर	कर्क

📊 D-2 होरा — धन एवं संपत्ति विश्लेषण

D-2 होरा कुंडली (धन एवं संपत्ति)

प्रत्येक राशि 15° की दो होराओं में विभाजित है। विषम राशि में पहली होरा सूर्य की (सिंह) और दूसरी चंद्र की (कर्क) होती है; सम राशि में क्रम उलटा रहता है।

सूर्य — सूर्य की होरा (सिंह)

स्वराशि में बलवान। सूर्य सिंह होरा में: अपनी ही होरा में सूर्य अत्यंत बलवान है। नेतृत्व एवं अधिकार के माध्यम से संपत्ति बढ़ेगी। सरकारी स्रोत अथवा उच्च पद से आर्थिक लाभ। आत्मविश्वास ही आपके धनार्जन का साधन है। सहज गुण पूर्ण रूप से प्रकट होंगे।

चंद्र — सूर्य की होरा (सिंह)

मित्रराशि में सहायक स्थिति। चंद्र सिंह होरा में: चंद्र के सूर्य की होरा में होने से धनार्जन में पुरुष अथवा पिता की भूमिका महत्वपूर्ण है। सरकारी अथवा प्रशासनिक स्रोत से आर्थिक लाभ। भावनाओं को नियंत्रित कर योजनापूर्वक बढ़ें तो प्रचुर उपार्जन होगा। सहयोग से उन्नति होगी।

मंगल – सूर्य की होरा (सिंह)

मित्रराशि में सहायक स्थिति। मंगल सिंह होरा में: साहसी उद्यम एवं प्रतिस्पर्धात्मक कार्य में संपत्ति की वृद्धि। प्रौद्योगिकी अथवा निर्माण उद्योग में निवेश शुभ है। आत्मविश्वास के साथ जोखिम लेने पर बड़ा लाभ आएगा। सहयोग से उन्नति होगी।

बुध – चंद्र की होरा (कर्क)

शत्रुराशि में कुछ बाधा। बुध कर्क होरा में: व्यापार, लेखन अथवा सूचना-सेवा से धनार्जन। पारिवारिक व्यवसाय में बुद्धि के बल पर उन्नति। बैंकिंग अथवा लेखाकर्म के पेशे में संचय बढ़ेगा। कौशल से समाधान संभव है।

बृहस्पति – चंद्र की होरा (कर्क)

उच्च स्थिति में अत्यंत शुभ। बृहस्पति कर्क होरा में: उच्च का होने से धनलाभ में असाधारण शुभ फल। शिक्षा, धर्म अथवा विधि के माध्यम से प्रचुर संपत्ति आएगी। पारिवारिक मूल्यों को केंद्र में रखकर आर्थिक सुरक्षा बनाएँगे। फल पूर्ण शक्ति से प्रकट होगा।

शुक्र – चंद्र की होरा (कर्क)

शत्रुराशि में कुछ बाधा। शुक्र कर्क होरा में: विलास-वस्तु, कला अथवा सौंदर्य उद्योग में संपत्ति की वृद्धि। स्त्री अथवा परिवार के माध्यम से आर्थिक सहायता। फैशन अथवा सांस्कृतिक कार्य में लाभदायक करियर। कौशल से समाधान संभव है।

शनि – चंद्र की होरा (कर्क)

शत्रुराशि में कुछ बाधा। शनि कर्क होरा में: धीरे किंतु स्थायी रूप से संपत्ति अर्जित होगी। कृषि, पुरानी संपत्ति अथवा पारंपरिक व्यवसाय से सुदृढ़ आर्थिक नींव। धैर्यपूर्वक किया निवेश ही दीर्घकालिक संपत्ति है। कौशल से समाधान संभव है।

राहु – सूर्य की होरा (सिंह)

शत्रुराशि में कुछ बाधा। राहु सिंह होरा में: सरकारी अथवा कॉर्पोरेट स्रोत से अप्रत्याशित आर्थिक सुविधा। नई प्रौद्योगिकी अथवा अप्रचलित व्यवसाय में बड़ा लाभ। आत्मप्रचार के माध्यम से संपत्ति बढ़ेगी। कौशल से समाधान संभव है।

केतु – सूर्य की होरा (सिंह)

शत्रुराशि में कुछ बाधा। केतु सिंह होरा में: गुप्त ज्ञान अथवा आध्यात्मिक सेवा के माध्यम से धनार्जन। प्रचलित मार्ग से धन कमाना कठिन है, किंतु अप्रचलित मार्ग से सफलता मिलेगी। त्याग के माध्यम से भी परम शांति प्राप्त होगी। कौशल से समाधान संभव है।

☺ D-7 सप्तमांश — संतान एवं सृजनशीलता

D-7 सप्तमांश कुंडली (संतान एवं सृजनशीलता) – लग्न: कर्क

सूर्य – 7वाँ भाव में मकर

शत्रुराशि में कुछ बाधा। संतान सुदर्शन एवं आकर्षक होगी; विवाह के बाद आपका संतान-सुख बढ़ेगा। संतान व्यावसायिक भागीदार की भाँति सहायक रहेगी। कौशल से समाधान संभव है।

चंद्र – 2रा भाव में सिंह

मित्रराशि में सहायक स्थिति। संतान पारिवारिक व्यवसाय अथवा खाद्य-उद्योग में सफल होगी। परिवार से अत्यंत घनिष्ठ संबंध बनाए रखेगी। सहयोग से उन्नति होगी।

मंगल – 5वाँ भाव में वृश्चिक

स्वराशि में बलवान। संतान अत्यंत उद्यमी होगी, खिलाड़ी अथवा प्रतियोगी परीक्षा में सफल रहेगी। सहज गुण पूर्ण रूप से प्रकट होंगे।

बुध – 12वाँ भाव में मिथुन

स्वराशि में बलवान। संतान विदेश जाकर सूचना-प्रौद्योगिकी अथवा शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करेगी। सहज गुण पूर्ण रूप से प्रकट होंगे।

बृहस्पति – 12वाँ भाव में मिथुन

शत्रुराशि में कुछ बाधा। संतान आध्यात्मिक होगी, विदेश जाकर धार्मिक कार्य करेगी। कौशल से समाधान संभव है।

शुक्र – 9वाँ भाव में मीन

उच्च स्थिति में अत्यंत शुभ। संतान विदेशी संस्कृति एवं कला में रुचि लेगी, विदेश जाकर प्रतिष्ठा पाएगी। फल पूर्ण शक्ति से प्रकट होगा।

शनि – 2रा भाव में सिंह

शत्रुराशि में कुछ बाधा। संतान कठोर परिश्रम से आर्थिक संपन्नता लाएगी। कौशल से समाधान संभव है।

राहु – 9वाँ भाव में मीन

नीच स्थिति के कारण कुछ प्रतिकूलता, किंतु सजगता से सुधार होगा। संतान विदेश जाकर डिजिटल नोमैड बनेगी। धैर्य एवं परिश्रम से अच्छा फल संभव है।

केतु – 3रा भाव में कन्या

नीच स्थिति के कारण कुछ प्रतिकूलता, किंतु सजगता से सुधार होगा। संतान गुप्त लेखन अथवा रहस्यमय विषयों की लेखिका होगी। धैर्य एवं परिश्रम से अच्छा फल संभव है।

D-10 दशमांश — कर्मजीवन एवं पेशा

D-10 दशमांश कुंडली (कर्मजीवन) – लग्न: वृश्चिक

सूर्य – 4था भाव में कुंभ

शत्रुराशि में कुछ बाधा। स्थावर संपत्ति, कृषि अथवा निर्माण उद्योग में नेतृत्व करेंगे। कौशल से समाधान संभव है।

चंद्र – 3रा भाव में मकर

संचार एवं नेटवर्किंग में सिद्धहस्त होंगे। कंटेंट राइटिंग अथवा मार्केटिंग में तीव्र उन्नति।

मंगल – 5वाँ भाव में मीन

मित्रराशि में सहायक स्थिति। खेल, प्रतियोगी परीक्षा अथवा अन्वेषणात्मक कार्य में प्रतिभा प्रकट होगी। सहयोग से उन्नति होगी।

बुध – 10वाँ भाव में सिंह

मित्रराशि में सहायक स्थिति। संचार, सूचना-प्रौद्योगिकी अथवा संचार-माध्यम के पेशे में शीर्ष पर पहुँचेंगे। सहयोग से उन्नति होगी।

बृहस्पति – 10वाँ भाव में सिंह

मित्रराशि में सहायक स्थिति। न्यायाधीश, प्रशासक अथवा नीति-निर्माता के रूप में शीर्ष पर रहेंगे। सहयोग से उन्नति होगी।

शुक्र – 7वाँ भाव में वृषभ

स्वराशि में बलवान। जनसंपर्क, क्लाइंट प्रबंधन अथवा विवाह-संबंधी सेवाओं में सफलता। सहज गुण पूर्ण रूप से प्रकट होंगे।

शनि – 1ला भाव में वृश्चिक

शत्रुराशि में कुछ बाधा। प्रशासन, विधि अथवा निर्माण उद्योग में नेतृत्व करेंगे। धीरे किंतु स्थायी रूप से करियर के शीर्ष पर पहुँचेंगे। कौशल से समाधान संभव है।

राहु – 9वाँ भाव में कर्क

शत्रुराशि में कुछ बाधा। विदेशी विश्वविद्यालय अथवा संस्था में अप्रचलित विषय पर शोध करेंगे। कौशल से समाधान संभव है।

केतु – 3रा भाव में मकर

शत्रुराशि में कुछ बाधा। रहस्यमय लेखन, डेटा एनालिटिक्स अथवा गुप्त ज्ञान के प्रचारक के रूप में ख्याति। कौशल से समाधान संभव है।

☯ D-12 द्वादशांश — माता-पिता एवं पूर्व कर्म

D-12 द्वादशांश कुंडली (माता-पिता) – लग्न: वृषभ

सूर्य – 11वाँ भाव में मीन

मित्रराशि में सहायक स्थिति। पिता लोकप्रिय एवं समाजसेवी हैं। सहयोग से उन्नति होगी।

चंद्र – 2रा भाव में मिथुन

मित्रराशि में सहायक स्थिति। माता आर्थिक प्रबंधन में दक्ष एवं भोजनप्रिय हैं। सहयोग से उन्नति होगी।

मंगल – 4था भाव में सिंह

मित्रराशि में सहायक स्थिति। माता-पिता में से एक संपत्ति एवं गृह को लेकर चिंतित हैं, किंतु अंततः स्थायी उन्नति होगी। सहयोग से उन्नति होगी।

बुध – 9वाँ भाव में मकर

माता-पिता उच्चशिक्षित हैं, विदेशी भाषा अथवा दर्शन पसंद करते हैं।

बृहस्पति – 5वाँ भाव में कन्या

शत्रुराशि में कुछ बाधा। माता-पिता सृजनशील हैं; आपकी संतान पुण्यवान होगी। कौशल से समाधान संभव है।

शुक्र – 2रा भाव में मिथुन

मित्रराशि में सहायक स्थिति। परिवार में ऐश्वर्य है; माता-पिता आभूषण अथवा फैशन व्यवसाय से जुड़े हैं। सहयोग से उन्नति होगी।

शनि – 12वाँ भाव में मेष

नीच स्थिति के कारण कुछ प्रतिकूलता, किंतु सजगता से सुधार होगा। माता-पिता विदेश में अथवा एकांत में साधना करते हैं। धैर्य एवं परिश्रम से अच्छा फल संभव है।

राहु – 9वाँ भाव में मकर

मित्रराशि में सहायक स्थिति। विदेशी शिक्षा अथवा डिजिटल नोमैड जीवन। सहयोग से उन्नति होगी।

केतु – 3रा भाव में कर्क

शत्रुराशि में कुछ बाधा। गुप्त लेखन अथवा रहस्यमय संवाद में माता-पिता की दक्षता है। कौशल से समाधान संभव है।

💎 D-9 नवमांश विशेष विश्लेषण — विवाह एवं भाग्य

विवाह · भाग्य · धर्म · आध्यात्मिकता

D-9 लग्न: कुंभ

(D-1 लग्न: कर्क)

कुंडलीगत विशेष D-9 योग

✓ चंद्र केंद्रस्थ योग

चंद्र D-9 में केंद्र में विराजमान — दांपत्य जीवन में स्थिरता, सुख एवं समृद्धि। घर में लक्ष्मी का वास।

ग्रहवार विस्तृत विश्लेषण

◆ सूर्य — D-9: 1ला भाव (कुंभ)

D-1: तुला | शक्ति: शत्रुराशि — बाधा आ सकती है

सूर्य D-9 लग्न में विराजमान — आपका जीवनसाथी दृढ़निश्चयी, आत्मविश्वासी एवं नेतृत्व के गुणों से युक्त होगा। वैवाहिक जीवन में आप स्वयं दीपशिखा बन उठेंगे। धार्मिक अनुष्ठानों में संयुक्त सहभागिता दांपत्य को पवित्र करेगी। किंतु अहंकार एवं अधिकार का संतुलन बनाए रखें — दोनों की मर्यादा बनी रहे तभी संबंध दीप्तिमान होगा।

⚠ शत्रुराशि — कुछ बाधाएँ आ सकती हैं। सजगता एवं धैर्य से अच्छा फल संभव है।

◆ युति: राहु एक ही भाव में स्थित हैं।

◆ दृष्टि: चंद्र की दृष्टि प्रभाव डाल रही है; बुध की दृष्टि प्रभाव डाल रही है; केतु की दृष्टि प्रभाव डाल रही है।

• त्रिकोण भाव — विवाह एवं भाग्य में सहज शुभ फल।

◆ चंद्र — D-9: 7वाँ भाव (सिंह)

D-1: कन्या | शक्ति: मित्रराशि — सहायक

चंद्र D-9 सप्तम में — भावुक, यत्नशील एवं लोकप्रिय साथी। वैवाहिक जीवन भावना के ज्वार में बहता है। जनसंपर्क के कार्य से साथी मिलने की संभावना। संबंध में स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व का सुंदर समन्वय।

• मित्रराशि — सहायक वातावरण में स्थित। पारस्परिक सहयोग से संबंध समृद्ध होगा।

◆ युति: बुध एवं केतु एक ही भाव में स्थित हैं।

◆ दृष्टि: सूर्य की दृष्टि प्रभाव डाल रही है; राहु की दृष्टि प्रभाव डाल रही है।

• केंद्र भाव — दांपत्य जीवन में स्थायित्व एवं नेतृत्व का संकेत।

◆ मंगल — D-9: 5वाँ भाव (मिथुन)

D-1: मकर | शक्ति: शत्रुराशि — बाधा आ सकती है

मंगल D-9 पंचम में — प्रेम एवं रोमांस में भावना की तीव्रता। संतान साहसी एवं उद्यमी होगी। जोखिमपूर्ण निवेश में साथी का परामर्श लें।

▲ शत्रुराशि — कुछ बाधाएँ आ सकती हैं। सजगता एवं धैर्य से अच्छा फल संभव है।

• त्रिकोण भाव — विवाह एवं भाग्य में सहज शुभ फल।

◆ बुध — D-9: 7वाँ भाव (सिंह)

D-1: वृश्चिक | शक्ति: मित्रराशि — सहायक

बुध D-9 सप्तम में — बुद्धिमान, कूटनीतिज्ञ एवं तारुण्यमय साथी। व्यावसायिक भागीदारी में सफलता आएगी। वाणी के माध्यम से ही प्रेम की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति होती है।

• मित्रराशि — सहायक वातावरण में स्थित। पारस्परिक सहयोग से संबंध समृद्ध होगा।

◆ युति: चंद्र एवं केतु एक ही भाव में स्थित हैं।

◆ दृष्टि: सूर्य की दृष्टि प्रभाव डाल रही है; राहु की दृष्टि प्रभाव डाल रही है।

• केंद्र भाव — दांपत्य जीवन में स्थायित्व एवं नेतृत्व का संकेत।

◆ बृहस्पति — D-9: 2रा भाव (मीन)

D-1: कुंभ | शक्ति: स्वराशि — अत्यंत बलवान

बृहस्पति D-9 द्वितीय में — आर्थिक परामर्शदाता अथवा अध्यापन से जुड़ा साथी। पारिवारिक मूल्य एवं सत्यनिष्ठा संबंध की नींव हैं। विवाह के बाद संपत्ति एवं ज्ञान दोनों का विस्तार।

★ स्वराशि — अपनी ही राशि में बलवान। सहज शक्ति स्वाभाविक रूप से प्रकट होगी।

◆ दृष्टि: शनि की दृष्टि विलंब एवं शिक्षा लाएगी — धैर्य से अंततः स्थायित्व आएगा।

◆ शुक्र — D-9: 3रा भाव (मेष)

D-1: तुला | शक्ति: सम राशि — मिश्र फल

शुक्र D-9 तृतीय में — संगीत, कला अथवा सोशल मीडिया के माध्यम से परिचय। भाई-बहनों से संबंध मधुर। बार-बार की आनंद यात्राओं में प्रेम के फूल खिलते हैं।

◆ शनि — D-9: 10वाँ भाव (वृश्चिक)

D-1: वृश्चिक | शक्ति: शत्रुराशि — बाधा आ सकती है

★ वर्गोत्तम

शनि D-9 दशम में — उच्चपदस्थ प्रशासक, न्यायाधीश अथवा अभियंता साथी। परिश्रम के माध्यम से समाज में सर्वोच्च मर्यादा की प्राप्ति।

△ शत्रुराशि — कुछ बाधाएँ आ सकती हैं। सजगता एवं धैर्य से अच्छा फल संभव है।

◆ दृष्टि: चंद्र की दृष्टि प्रभाव डाल रही है; बुध की दृष्टि प्रभाव डाल रही है; केतु की दृष्टि प्रभाव डाल रही है।

• केंद्र भाव — दांपत्य जीवन में स्थायित्व एवं नेतृत्व का संकेत।

◆ राहु — D-9: 1ला भाव (कुंभ)

D-1: मीन | शक्ति: मित्रराशि — सहायक

राहु D-9 लग्न में — अप्रचलित, आधुनिक एवं विविध चिंतन वाला साथी। प्रौद्योगिकी अथवा डिजिटल माध्यम से परिचय की संभावना। संबंध में अस्थिरता आए तो भी अंततः बंधन दृढ़ हो जाता है।

• मित्रराशि — सहायक वातावरण में स्थित। पारस्परिक सहयोग से संबंध समृद्ध होगा।

◆ युति: सूर्य एक ही भाव में स्थित हैं।

◆ दृष्टि: मंगल की दृष्टि साहस एवं शक्ति जोड़ रही है; चंद्र की दृष्टि प्रभाव डाल रही है; बुध की दृष्टि प्रभाव डाल रही है; केतु की दृष्टि प्रभाव डाल रही है।

• त्रिकोण भाव — विवाह एवं भाग्य में सहज शुभ फल।

◆ केतु — D-9: 7वाँ भाव (सिंह)

D-1: कन्या | शक्ति: शत्रुराशि — बाधा आ सकती है

केतु D-9 सप्तम में — विवाह में अप्रचलित मार्ग का चयन। साथी तांत्रिक अथवा आध्यात्मिक साधक हो सकता है। संबंध जितना सांसारिक नहीं, उससे कहीं अधिक आत्मिक है।

△ शत्रुराशि — कुछ बाधाएँ आ सकती हैं। सजगता एवं धैर्य से अच्छा फल संभव है।

◆ युति: चंद्र एवं बुध एक ही भाव में स्थित हैं।

◆ दृष्टि: सूर्य की दृष्टि प्रभाव डाल रही है; राहु की दृष्टि प्रभाव डाल रही है; शुक्र की दृष्टि प्रभाव डाल रही है।

• केंद्र भाव — दांपत्य जीवन में स्थायित्व एवं नेतृत्व का संकेत।

D-9 सप्तम भाव विशेष विश्लेषण

D-9 लग्न: कुंभ | सप्तम राशि: सिंह | सप्तमेश: सूर्य

सप्तम भावस्थ ग्रह: चंद्र, बुध, केतु

सप्तमेश सूर्य D-9 के 1ला भाव में कुंभ राशि में स्थित है।

शक्ति: शत्रुराशि — बाधा आ सकती है

★ सप्तमेश केंद्र में — जीवनसाथी सशक्त, प्रभावशाली एवं नेतृत्व करने में सक्षम होगा।

शुभ ग्रह (चंद्र, बुध) सप्तम में — दांपत्य सुख एवं समृद्धि।

⚠ पाप ग्रह (केतु) सप्तम में — विशेष उपाय एवं सजगता आवश्यक है।

★ वर्गोत्तम एवं पुष्करांश विश्लेषण

★ वर्गोत्तम ग्रह: शनि

D-1 एवं D-9 दोनों चार्ट में एक ही राशि में स्थित — यह ग्रह अत्यंत बलवान है। विवाह एवं भाग्य में इसका फल दुगुनी शक्ति से कार्य करेगा।

पुष्करांश ग्रह: इस कुंडली में नहीं है।

D-9 चार्ट ग्रह स्थिति सारणी

ग्रह D-1 राशि D-9 राशि D-9 भाव शक्ति

सूर्य तुला कुंभ 1 शत्रुराशि — बाधा आ सकती है

चंद्र कन्या सिंह 7 मित्रराशि — सहायक

मंगल मकर मिथुन 5 शत्रुराशि — बाधा आ सकती है

बुध वृश्चिक सिंह 7 मित्रराशि — सहायक

बृहस्पति कुंभ मीन 2 स्वराशि — अत्यंत बलवान

शुक्र तुला मेष 3 सम राशि — मिश्र फल

शनि वृश्चिक वृश्चिक 10 शत्रुराशि — बाधा आ सकती है

राहु मीन कुंभ 1 मित्रराशि — सहायक

केतु कन्या सिंह 7 शत्रुराशि — बाधा आ सकती है

ॐ यह विश्लेषण ज्योतिषशास्त्र की पारंपरिक पद्धति से तैयार है

यह मार्गदर्शन मात्र है — अंतिम निर्णय विशेषज्ञ के परामर्श से लें।

अष्टकवर्ग बिंदु सारणी

प्रत्येक ग्रह 8 स्रोतों से बिंदु पाता है (0-8)। 4+ = शुभ। SAV = सर्वाष्टकवर्ग (7 ग्रहों का योग, अधिकतम 56)।

ग्रह \ भाव	1ला कर	2रा सि	3रा कन	4था तु	5वाँ वृ	6ठा धन	7वाँ मक	8वाँ कु	9वाँ मी	10वाँ मे	11वाँ वृ	12वाँ मि
सूर्य	7	5	4	5	4	2	4	4	3	5	3	4
चंद्र	3	4	6	1	4	4	4	5	5	4	5	4
मंगल	6	5	3	2	4	2	4	5	3	3	3	1
बुध	6	6	5	5	4	4	5	6	2	4	3	4
बृहस्पति	6	6	2	5	6	4	5	4	6	6	4	2
शुक्र	5	5	7	4	5	4	4	3	4	3	4	4
शनि	5	3	3	4	3	3	3	1	3	4	3	3
कुल (SAV)	38	34	30	26	30	23	29	28	26	29	25	22

सर्वाष्टकवर्ग विश्लेषण

✓ सशक्त भाव (28+ बिंदु): लग्न (व्यक्तित्व) = 38 · धन (अर्थ) = 34 · पराक्रम (साहस) = 30 ·

विद्या (संतान) = 30 · दांपत्य = 29 · कर्म (पेशा) = 29 · आयु (बाधा) = 28

इन भावों में गोचर करते ग्रह विशेष शुभ फल देंगे। जीवन के ये क्षेत्र स्वभावतः सशक्त हैं।

कुल SAV: 340 / औसत: 28.3 (आदर्श: 25-33)

भिन्नाष्टकवर्ग गोचर मार्गदर्शिका

सूर्य भिन्नाष्टकवर्ग – कुल: 50

शुभ गोचर राशि: कर्क(7), सिंह(5), तुला(5), मेष(5)

कठिन गोचर राशि: धनु(2)

सूर्य जिस राशि में अधिक बिंदु पाते हैं, उस राशि में गोचर के समय सरकारी सुविधा, पिता का कल्याण एवं आत्मविश्वास बढ़ता है।

चंद्र भिन्नाष्टकवर्ग – कुल: 49

शुभ गोचर राशि: कन्या(6), कुंभ(5), मीन(5), वृषभ(5)

कठिन गोचर राशि: तुला(1)

चंद्र के अधिक बिंदु वाली राशि में गोचर के समय मानसिक शांति, पारिवारिक सुख एवं संपत्ति की प्राप्ति होती है।

मंगल भिन्नाष्टकवर्ग – कुल: 41

शुभ गोचर राशि: कर्क(6), सिंह(5), कुंभ(5)

कठिन गोचर राशि: मिथुन(1), तुला(2), धनु(2)

मंगल की सशक्त राशि में गोचर के समय साहस, उद्यम एवं प्रतिस्पर्धा में सफलता आती है।

बुध भिन्नाष्टकवर्ग – कुल: 54

शुभ गोचर राशि: कर्क(6), सिंह(6), कुंभ(6), कन्या(5), तुला(5), मकर(5)

कठिन गोचर राशि: मीन(2)

बुध के अधिक बिंदु वाली राशि में गोचर के समय व्यापार, संवाद एवं बौद्धिक कार्यों में सफलता मिलती है।

बृहस्पति भिन्नाष्टकवर्ग – कुल: 56

शुभ गोचर राशि: कर्क(6), सिंह(6), वृश्चिक(6), मीन(6), मेष(6), तुला(5), मकर(5)

कठिन गोचर राशि: कन्या(2), मिथुन(2)

बृहस्पति की सशक्त राशि में गोचर के समय ज्ञान, धर्म, संतान एवं भाग्य की सहायता प्राप्त होती है।

शुक्र भिन्नाष्टकवर्ग – कुल: 52

शुभ गोचर राशि: कन्या(7), कर्क(5), सिंह(5), वृश्चिक(5)

शुक्र के अधिक बिंदु वाली राशि में सुख, प्रेम, कलाकारी एवं विलासिता के अवसर बढ़ते हैं।

शनि भिन्नाष्टकवर्ग – कुल: 38

शुभ गोचर राशि: कर्क(5)

कठिन गोचर राशि: कुंभ(1)

शनि की सशक्त राशि में गोचर के समय परिश्रम का फल मिलता है, धैर्य से सफलता आती है।

☾ गोचर कुंडली (आज की ग्रह स्थिति)

		शनि राहु
लग्न चंद्र मंग बृह	गोचर चक्र	
केतु रवि	बुध शुक्र	

ग्रह	राशि	अंश	गोचर भाव
सूर्य	कन्या	18°47'	1
चंद्र	कर्क	24°04'	11
मंगल	कर्क	10°29'	11
बुध	तुला	13°07'	2
बृहस्पति	कर्क	26°16'	11
शुक्र	तुला	14°05'	2
शनि	मीन	16°55'	7
राहु	कुंभ	3°12'	6
केतु	सिंह	3°12'	12

☾ गोचर फलादेश (जन्म चंद्र राशि से)

🔮 चंद्र शुद्धि (शुभ): चंद्र जन्मराशि से एकादश भाव में — शुभचंद्र। अशुभ गोचर में भी कुछ शुभ प्रभाव पड़ेगा।

सूर्य — कन्या → जन्मराशि (प्रथम भाव) **अशुभ**

अष्टकवर्ग 5/8 ● मध्यम

स्थान की हानि

सूर्य इस समय आपकी जन्मराशि में स्थित हैं, जो आपके अस्तित्व के मूल केंद्र में तेजस्वी सूर्य के सीधे आगमन का संकेत है। इस एक माह में जिस स्थान को आपने अब तक सुरक्षित आश्रय माना था — निवास या कार्यक्षेत्र — वहाँ से हटना पड़ सकता है। जो पुराना टूटता है, वह नए के लिए स्थान बनाने को ही टूटता है। आत्मविश्वास कई गुना बढ़ेगा, पर अहंकार भी सिर उठा सकता है; स्वयं को सर्वाधिक सही मानेंगे और दूसरों का मत स्वीकारने में कठिनाई होगी। सूर्य से यह शिक्षा लें — वे जगत को प्रकाश देते हैं पर कभी आँख में सीधे नहीं ताकते; विनम्र रहकर ही प्रकाश फैलाते हैं। शारीरिक रूप से सिरदर्द, ज्वर अथवा नेत्र की समस्या उभर सकती है; पर्याप्त जल लें, विश्राम करें, और परेशानी बनी रहे तो चिकित्सक से परामर्श करें। यह गोचर परिवर्तन की हवा लाता है; परिवर्तन का स्वागत कर सकें तो यह किसी महान आरंभ का द्वार बनेगा। राशि-प्रवेश के समय फल तीव्रता से अनुभव होगा।

चंद्र — कर्क → एकादश भाव **शुभ**

अष्टकवर्ग 3/8 ✧ दुर्बल

धनवृद्धि और मित्रलाभ

चंद्र इस समय आपके एकादश भाव में स्थित हैं, और लाभ तथा मित्रता के इस भाव में चंद्र का गोचर आय का द्वार खोल देता है। इन सवा दो दिनों में धनवृद्धि और अप्रत्याशित लाभ होगा, मित्रों के संग आनंदपूर्ण समय बीतेगा और सामाजिक आयोजन प्रीतिकर रहेगा। बस अति-आशा और लोभ को त्याग दें। निर्गमन के समय फल तीव्रता से अनुभव होगा।

मंगल — कर्क → एकादश भाव **शुभ**

अष्टकवर्ग 6/8 ★ बलवान

भूमिलाभ और संपत्ति वृद्धि

मंगल इस समय आपके एकादश भाव में स्थित हैं, और लाभ, आय तथा मित्रता के इस भाव में मंगल का गोचर आपके आर्थिक और सामाजिक जीवन में नए अध्याय का आरंभ करता है। इन तीन पक्षों में भूमि अथवा संपत्ति का लाभ हो सकता है, आय का नया स्रोत बनेगा, और मित्रों से संबंध और मज़बूत होंगे। किंतु भूमि और संपत्ति की रक्षा में विवेक चाहिए; लाभ के लोभ में कोई जोखिम भरा निवेश न करें। राशि-प्रवेश के समय फल तीव्रता से अनुभव होगा।

बुध – तुला → द्वितीय भाव **शुभ**

अष्टकवर्ग 5/8 • मध्यम

धनलाभ और व्यापारिक सफलता

बुध इस समय आपके द्वितीय भाव में स्थित हैं, और धन-संपदा तथा वाणी के इस भाव में बुध का गोचर आपके आर्थिक जीवन में नई गति लाएगा। इन अठारह दिनों में आपकी वाणी इतनी प्रभावशाली होगी कि शब्दों के बल पर ही व्यापार में सफलता मिलेगी। परिवार के साथ बौद्धिक चर्चा आनंददायक रहेगी; लेखन अथवा लेखा-जोखा के कार्य से लाभ होगा। इस भाव में बुध सफलता देंगे, किंतु शर्त एक ही है – सत्य के मार्ग पर चलना होगा। सभी समय फल समान रूप से अनुभव होगा।

बृहस्पति – कर्क → एकादश भाव **शुभ**

अष्टकवर्ग 6/8 ★ बलवान

स्थान और धन का लाभ

◆ महादशा-गोचर समन्वय: बृहस्पति की महादशा में उसी ग्रह का शुभ गोचर – फल कई गुना बढ़ता है। धनलाभ योग: बृहस्पति का एकादश गोचर और अनुकूल महादशा – अर्थलाभ का विशेष योग।

बृहस्पति इस समय आपके एकादश भाव में स्थित हैं – लाभ, आय, मित्रता, विस्तृत सामाजिक परिमंडल और स्वप्न-पूर्ति के इस भाव में देवगुरु का शुभ गोचर आपके आर्थिक और सामाजिक जीवन में नई भोर का आरंभ करेगा। पंजिका के अनुसार यहाँ स्थान और धनलाभ का विशेष योग है: इस एक वर्ष में नया कार्यक्षेत्र, निवास अथवा सामाजिक स्थान प्राप्त होगा, और आर्थिक प्रवाह स्थिर तथा बढ़ता रहेगा। शिक्षा, धर्म अथवा जनसेवा के कार्य से समाज में विशेष सम्मान और पहचान मिलेगी। मित्रों और शुभचिंतकों से अप्रत्याशित सहयोग तथा उपहार मिलेंगे। शारीरिक रूप से टखने और शिराओं की समस्या में सतर्क रहें। प्रत्येक बृहस्पतिवार विद्यार्थियों को पुस्तक और वस्त्र दान करें – यह दान इस गोचर के फल को असाधारण रूप से बढ़ाएगा। स्मरण रहे – एकादश भाव में गुरु संपदा समाजसेवा के लिए देते हैं; जो इसे कल्याण-कार्य में लगाता है, उसे अगले वर्ष भी गुरु की कृपा मिलती है। मध्यकाल में फल विशेष रूप से अनुभव होगा।

शुक्र – तुला → द्वितीय भाव **शुभ**

अष्टकवर्ग 4/8 • मध्यम

अर्थलाभ और पारिवारिक सुख

△ वेध: शनि के सप्तम भाव में होने से इस गोचर का फल रुद्ध हो रहा है। (पराशर होराशास्त्र अध्याय ३०)

शुक्र इस समय आपके द्वितीय भाव में स्थित हैं, और धन-संपदा तथा वाणी के इस भाव में शुक्र का गोचर आपके आर्थिक जीवन पर सौभाग्य की वर्षा करेगा। इन अठ्ठाईस दिनों में आपकी वाणी इतनी मधुर और आकर्षक होगी कि आप सहज ही लोगों को मुग्ध कर सकेंगे। अर्थलाभ होगा, परिवार में सुख-शांति और स्नेह का वातावरण रहेगा। शुक्र धन और प्रेम – दोनों देंगे, बस कपट न रखें। मध्यकाल में फल विशेष रूप से अनुभव होगा।

शनि – मीन → सप्तम भाव **अशुभ**

अष्टकवर्ग 3/8 ✧ दुर्बल

अनिष्ट और दांपत्य कष्ट

शनि इस समय आपके सप्तम भाव में गोचर कर रहे हैं — जीवनसाथी, विवाह, व्यावसायिक साझेदारी और सामाजिक संबंधों का भाव। न्याय के इस ग्रह का ढाई वर्ष का गोचर आपके सभी संबंधों की नींव को कठोरता से परखेगा। पंजिका के अनुसार यहाँ अनिष्ट का योग है — जीवनसाथी से दूरी, गलतफ़हमी और मतभेद चरम रूप ले सकते हैं, यहाँ तक कि विच्छेद की छाया भी दिख सकती है। व्यावसायिक साझेदारी में विश्वासघात का सामना करना पड़ सकता है। शारीरिक रूप से गुर्दे, मूत्राशय और प्रजनन अंगों की समस्या उभर सकती है — भरपूर पानी पिएँ और नियमित जाँच कराते रहें। संबंधों में धैर्य रखें — शनि संबंध की कमज़ोर जगह मरम्मत के लिए चिह्नित करते हैं, तोड़ने के लिए नहीं। साथी के प्रति सम्मान और निष्ठा बनाए रखें, नए व्यावसायिक अनुबंध से बचें। प्रत्येक शनिवार दंपती साथ मिलकर शनि स्तोत्र का पाठ करें, तिल दान करें और हनुमान पूजा करें। स्मरण रहे — सप्तम भाव में शनि जिस संबंध को तोड़ते हैं वह आरंभ से ही दुर्बल था; ये ढाई वर्ष आपके संबंध को नए सिरे से गढ़ने का अवसर हैं। निर्गमन काल में फल तीव्रता से अनुभव होगा।

राहु — कुंभ → षष्ठ भाव शुभ

शुभ फल और शत्रु पराजय

▲ वेध: केतु के द्वादश भाव में होने से इस गोचर का फल रुद्ध हो रहा है। (पराशर होराशास्त्र अध्याय ३०)

◆ अंतर्दशा-गोचर समन्वय: राहु की अंतर्दशा में उसी ग्रह का गोचर — इस समय फल विशेष रूप से अनुभव होगा।

राहु इस समय आपके षष्ठ भाव में स्थित हैं — और अन्य सभी स्थितियों के विपरीत, शत्रु, रोग तथा ऋण के इस भाव में छाया-ग्रह का गोचर अत्यंत शुभ फल देता है। पंजिका के अनुसार यहाँ शुभ फल का विशेष योग है — इन डेढ़ वर्षों में शत्रु पराजित होंगे, यद्यपि राहु जिस प्रकार विजय देते हैं वह अप्रचलित और विचित्र होता है — शत्रु स्वयं अपने ही जाल में फँसेंगे। दीर्घकालीन रहस्यमय रोग से आकस्मिक मुक्ति मिल सकती है। ऋण चुकाने का अप्रत्याशित मार्ग खुलेगा। प्रौद्योगिकी अथवा विदेशी संपर्क का उपयोग कर प्रतियोगिता में आगे रह सकेंगे। शारीरिक रूप से त्वचा की पुरानी समस्या से मुक्ति मिल सकती है — वैकल्पिक अथवा अप्रचलित चिकित्सा इस काल में विशेष फलदायी हो सकती है। बस विजय के मद में न डूबें। दुर्गा पूजा और नारियल अर्पण करें। स्मरण रहे — षष्ठ भाव में राहु अदृश्य शक्ति से शत्रु जिताते हैं; इस शक्ति को सत्कर्म में लगाएँ, असत् मार्ग में नहीं। सभी समय फल समान रूप से अनुभव होगा।

केतु – सिंह → द्वादश भाव **अशुभ**

केतु द्वादश में – मोक्ष योग, व्यय वृद्धि, विदेश प्रवास

केतु द्वादश भाव में गोचर करें तो पंजिका के अनुसार मोक्ष योग बनता है, यद्यपि सांसारिक दृष्टि से व्यय-वृद्धि और प्रवास की आशंका रहती है। पूर्वजन्म के कर्म की परिसमाप्ति का काल होने से पुराने बंधन से मुक्ति का अवसर है। एकाकीपन, निःसंगता और वैराग्य की प्रवृत्ति तीव्र हो उठती है। शयनकक्ष में सुख का अभाव और दांपत्य जीवन में विच्छेद की आशंका। पैरों की समस्या अथवा चिकित्सालय में रहने की संभावना रहती है। गुप्त शत्रु अथवा अदृश्य बाधा के कारण कार्य में विघ्न हो सकता है। अध्यात्म साधना में मन लगाएँ तो यह काल आत्मज्ञान का महा-अवसर है। उपाय: तिल दान और कंबल दान विशेष रूप से करें। गणेश पूजा और महामृत्युंजय मंत्र का जप करें। प्रतिदिन ध्यान-योग का अभ्यास करने से केतु की मोक्ष-प्रवृत्ति को आत्मोपलब्धि में रूपांतरित करना संभव है।

② सर्वतोभद्र चक्र

9×9 ग्रिड में 27 नक्षत्र सजाए गए। सुनहरा = जन्म नक्षत्र · नीला = आज का गोचर · लाल आभा = वेध नक्षत्र।

गुरु	1 अश्वि नी	2 भरणी	3 कृत्ति का	4 रोहिणी	5 मृग शिरा	6 आर्द्रा	7 पुनर्वसु	चंद्र
◇								8 पुष्य
27 रेवती								9 आश्लेषा
26 उ. भाद्र								10 मघा
25 पू. भाद्र				ब्रह्म चंद्र				11 पू. फाल्गु
24 शतभिषा								12 उ. फाल्गु
23 धनिष्ठा								13 हस्त
22 श्रवण								14 चित्रा
शनि	21 उ. आषाढ़ा	20 पू. आषाढ़ा	19 मूल	18 ज्येष्ठा	17 अनुराधा	16 विशाखा	15 स्वाती	सूर्य

■ जन्म नक्षत्र ■ आज का गोचर ■ वेध नक्षत्र

आज का वेध विश्लेषण

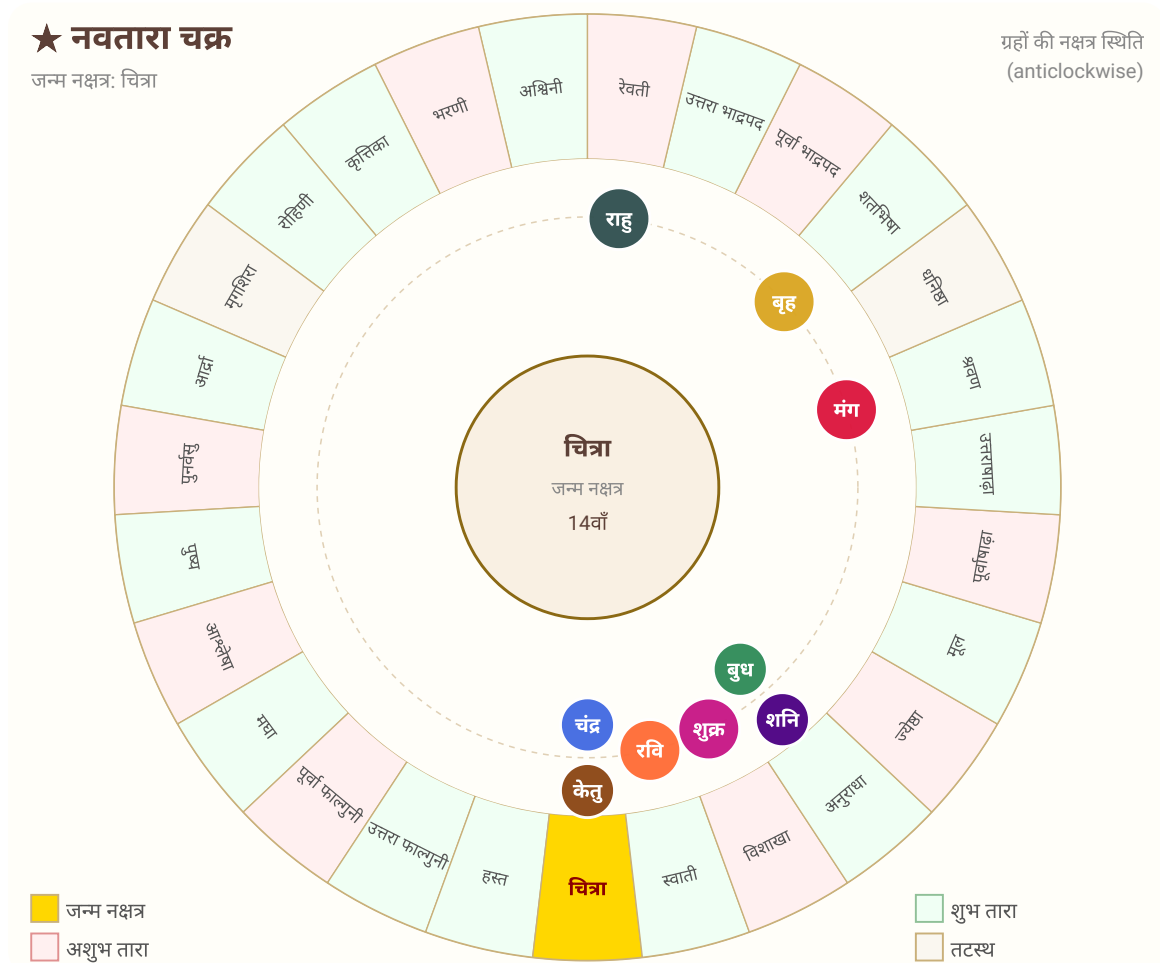
✓ आज के गोचर में जन्म नक्षत्र पर कोई वेध नहीं। शुभ कार्य के लिए अनुकूल समय।

आज का गोचर नक्षत्र:

सूर्य: स्वाती चंद्र: चित्रा बृहस्पति: शतभिषा शनि: अनुराधा राहु: रेवती

सर्वतोभद्र चक्र में एक ही पंक्ति या स्तंभ में स्थित नक्षत्रों के बीच वेध होता है। वेधकारी ग्रह के गोचरकाल में विवाह, गृहप्रवेश, व्यवसाय आरंभ आदि शुभ कार्य टालने चाहिए।

☆ नवतारा चक्र • षड्नाड़ी चक्र • त्रिपाप चक्र

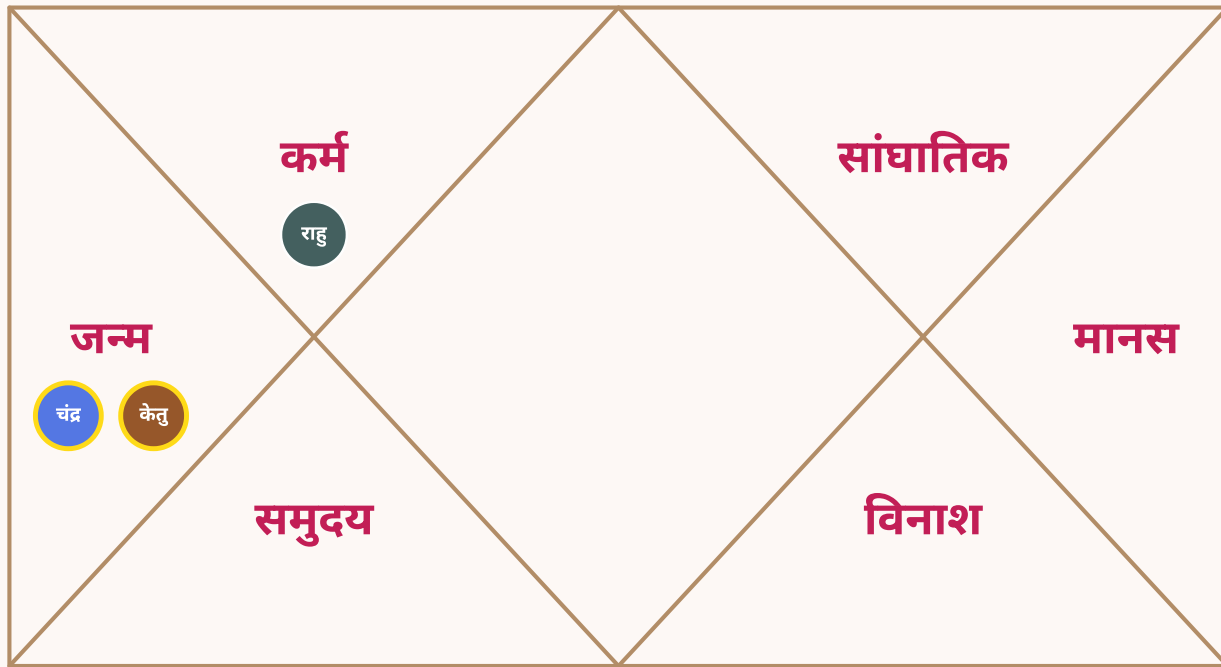


नवतारा ग्रह विश्लेषण

जन्म नक्षत्र **चित्रा** से प्रत्येक ग्रह की तारा स्थिति

ग्रह	नक्षत्र	तारा	प्रभाव	फलादेश
सूर्य	स्वाती	संपत्	✓ शुभ	धन-संपदा, आर्थिक लाभ एवं सुख की वृद्धि करता है।
चंद्र	चित्रा	• जन्म	• तटस्थ	स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व पर प्रभाव — मिश्र फल देता है।
मंगल	श्रवण	अतिमित्र	✓ शुभ	महाशुभ — सर्वोच्च सफलता एवं समृद्धि देता है।
बुध	अनुराधा	✓ क्षेम	✓ शुभ	सुख, शांति एवं पारिवारिक मंगल प्रदान करता है।
बृहस्पति	शतभिषा	संपत्	✓ शुभ	धन-संपदा, आर्थिक लाभ एवं सुख की वृद्धि करता है।
शुक्र	विशाखा	△ विपत्	△ अशुभ	विपत्ति, बाधा, अस्वस्थता एवं शत्रुवृद्धि होती है।
शनि	अनुराधा	✓ क्षेम	✓ शुभ	सुख, शांति एवं पारिवारिक मंगल प्रदान करता है।
राहु	रेवती	प्रत्यरि	△ अशुभ	शत्रुता, विवाद एवं मानसिक अशांति देता है।
केतु	चित्रा	• जन्म	• तटस्थ	स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व पर प्रभाव — मिश्र फल देता है।

षड्नाड़ी चक्र



सफेद बॉर्डर = गोचर ग्रह, सुनहरा बॉर्डर = जन्म ग्रह

षड्नाड़ी चक्र — नक्षत्र सूची

जन्म नक्षत्र: चित्रा | वर्तमान गोचर पापग्रह विश्लेषण

नाड़ी	नक्षत्र	क्रम	विषय	पापग्रह	अवस्था
जन्म नाड़ी	चित्रा	14वाँ	शरीर एवं स्वास्थ्य	—	✓ शुद्ध
कर्म नाड़ी	धनिष्ठा	23वाँ	कर्म एवं व्यवसाय	राहु	⚠ अशुभ
△ सांघातिक नाड़ी	भरणी	2वाँ	विपद् एवं संकट	—	✓ शुद्ध
समुदय नाड़ी	रोहिणी	4वाँ	सहयोगी एवं परिवेश	—	✓ शुद्ध
विनाश नाड़ी	आश्लेषा	9वाँ	कार्य का विनाश	—	✓ शुद्ध
मानस नाड़ी	पूर्वा फाल्गुनी	11वाँ	मानसिकता एवं मन	—	✓ शुद्ध

△ गोचर पापग्रहों का प्रभाव:

- कर्म नाड़ी (धनिष्ठा) — राहु [तीव्र]: कर्महानि, अर्थनाश, नौकरी में पदावनति।

षड्नाड़ी चक्र — गोचर में पापग्रहों के अशुभ प्रभाव के निर्णय हेतु प्रयुक्त

४ विंशोत्तरी दशा

जन्मकालीन दशा संतुलन: मंगल दशा के 6.38 वर्ष शेष थे

वर्तमान महादशा: बृहस्पति (15.5 / 16.0 वर्ष – 97% पूर्ण)

अंतर्दशा: राहु (1.95 / 2.40 वर्ष – 81% पूर्ण)

विंशोत्तरी दशा

क्र. एवं दशेश	आरंभ	समाप्ति	अवधि
1. मंगल	31-10-1986	20-03-1993	6व
2. राहु	20-03-1993	20-03-2011	18व
3. बृहस्पति	20-03-2011	20-03-2027	16व
4. शनि	20-03-2027	20-03-2046	19व
5. बुध	20-03-2046	20-03-2063	17व
6. केतु	20-03-2063	20-03-2070	7व
7. शुक्र	20-03-2070	20-03-2090	20व
8. सूर्य	20-03-2090	19-03-2096	6व
9. चंद्र	19-03-2096	20-03-2106	10व

अंतर्दशा विभाजन

मंगल अंतर्दशा			राहु अंतर्दशा		
	आरंभ	समाप्ति		आरंभ	समाप्ति
राहु	31-10-1986	03-09-1987	राहु	20-03-1993	30-11-1995
बृहस्पति	03-09-1987	09-08-1988	बृहस्पति	30-11-1995	25-04-1998
शनि	09-08-1988	19-09-1989	शनि	25-04-1998	02-03-2001
बुध	19-09-1989	15-09-1990	बुध	02-03-2001	19-09-2003
केतु	15-09-1990	11-02-1991	केतु	19-09-2003	06-10-2004
शुक्र	11-02-1991	12-04-1992	शुक्र	06-10-2004	07-10-2007
सूर्य	12-04-1992	18-08-1992	सूर्य	07-10-2007	30-08-2008
चंद्र	18-08-1992	20-03-1993	चंद्र	30-08-2008	02-03-2010
			मंगल	02-03-2010	20-03-2011

बृहस्पति अंतर्दशा			शनि अंतर्दशा		
	आरंभ	समाप्ति		आरंभ	समाप्ति
बृहस्पति	20-03-2011	08-05-2013	शनि	20-03-2027	23-03-2030
शनि	08-05-2013	18-11-2015	बुध	23-03-2030	30-11-2032
बुध	18-11-2015	24-02-2018	केतु	30-11-2032	09-01-2034
केतु	24-02-2018	30-01-2019	शुक्र	09-01-2034	11-03-2037
शुक्र	30-01-2019	01-10-2021	सूर्य	11-03-2037	21-02-2038
सूर्य	01-10-2021	20-07-2022	चंद्र	21-02-2038	22-09-2039
चंद्र	20-07-2022	18-11-2023	मंगल	22-09-2039	30-10-2040
मंगल	18-11-2023	24-10-2024	राहु	30-10-2040	06-09-2043
राहु	24-10-2024	20-03-2027	बृहस्पति	06-09-2043	20-03-2046

अंतर्दशा विभाजन

बुध अंतर्दशा		
	आरंभ	समाप्ति
बुध	20-03-2046	15-08-2048
केतु	15-08-2048	13-08-2049
शुक्र	13-08-2049	12-06-2052
सूर्य	12-06-2052	19-04-2053
चंद्र	19-04-2053	19-09-2054
मंगल	19-09-2054	15-09-2055
राहु	15-09-2055	04-04-2058
बृहस्पति	04-04-2058	10-07-2060
शनि	10-07-2060	20-03-2063

केतु अंतर्दशा		
	आरंभ	समाप्ति
केतु	20-03-2063	16-08-2063
शुक्र	16-08-2063	15-10-2064
सूर्य	15-10-2064	21-02-2065
चंद्र	21-02-2065	22-09-2065
मंगल	22-09-2065	17-02-2066
राहु	17-02-2066	08-03-2067
बृहस्पति	08-03-2067	11-02-2068
शनि	11-02-2068	23-03-2069
बुध	23-03-2069	20-03-2070

शुक्र अंतर्दशा		
	आरंभ	समाप्ति
शुक्र	20-03-2070	20-07-2073
सूर्य	20-07-2073	20-07-2074
चंद्र	20-07-2074	19-03-2076
मंगल	19-03-2076	20-05-2077
राहु	20-05-2077	19-05-2080
बृहस्पति	19-05-2080	18-01-2083
शनि	18-01-2083	20-03-2086
बुध	20-03-2086	18-01-2089
केतु	18-01-2089	20-03-2090

सूर्य अंतर्दशा		
	आरंभ	समाप्ति
सूर्य	20-03-2090	07-07-2090
चंद्र	07-07-2090	06-01-2091
मंगल	06-01-2091	14-05-2091
राहु	14-05-2091	06-04-2092
बृहस्पति	06-04-2092	24-01-2093
शनि	24-01-2093	06-01-2094
बुध	06-01-2094	12-11-2094
केतु	12-11-2094	20-03-2095
शुक्र	20-03-2095	19-03-2096

चंद्र अंतर्दशा		
	आरंभ	समाप्ति
चंद्र	19-03-2096	18-01-2097
मंगल	18-01-2097	19-08-2097
राहु	19-08-2097	17-02-2099
बृहस्पति	17-02-2099	19-06-2100
शनि	19-06-2100	18-01-2102
बुध	18-01-2102	19-06-2103
केतु	19-06-2103	18-01-2104
शुक्र	18-01-2104	19-09-2105
सूर्य	19-09-2105	20-03-2106

विंशोत्तरी प्रत्यंतर्दशा		
सक्रिय चक्र: बृहस्पति महादशा ➡ राहु अंतर्दशा		
राहु	24-10-2024	05-03-2025
बृहस्पति	05-03-2025	30-06-2025
शनि	30-06-2025	16-11-2025
बुध	16-11-2025	20-03-2026
केतु	20-03-2026	10-05-2026
शुक्र	10-05-2026	03-10-2026
सूर्य	03-10-2026	16-11-2026
चंद्र	16-11-2026	28-01-2027
मंगल	28-01-2027	20-03-2027

आकाशीय ग्रह गोचर दर्पण

आगामी 2 वर्षों का राशि परिवर्तन एवं भाव विश्लेषण

अक्टूबर 2026

17 अक्टूबर	सूर्य	कन्या → तुला	४था भाव
31 अक्टूबर	बृहस्पति	कर्क → सिंह	२रा भाव

नवंबर 2026

6 नवंबर	शुक्र	तुला → कन्या	३रा भाव
12 नवंबर	मंगल	कर्क → सिंह	२रा भाव
16 नवंबर	सूर्य	तुला → वृश्चिक	५वाँ भाव
22 नवंबर	शुक्र	कन्या → तुला	४था भाव

दिसंबर 2026

2 दिसंबर	बुध	तुला → वृश्चिक	५वाँ भाव
5 दिसंबर	राहु	कुंभ → मकर	७वाँ भाव
16 दिसंबर	सूर्य	वृश्चिक → धनु	६ठा भाव
22 दिसंबर	बुध	वृश्चिक → धनु	६ठा भाव

जनवरी 2027

1 जनवरी	शुक्र	तुला → वृश्चिक	५वाँ भाव
10 जनवरी	बुध	धनु → मकर	७वाँ भाव
14 जनवरी	सूर्य	धनु → मकर	७वाँ भाव
25 जनवरी	बृहस्पति	सिंह → कर्क	१ला भाव
28 जनवरी	बुध	मकर → कुंभ	८वाँ भाव
29 जनवरी	शुक्र	वृश्चिक → धनु	६ठा भाव

फ़रवरी 2027

13 फ़रवरी	सूर्य	मकर → कुंभ	८वाँ भाव
24 फ़रवरी	बुध	कुंभ → मकर	७वाँ भाव
24 फ़रवरी	शुक्र	धनु → मकर	७वाँ भाव

MyAstrology • डॉ. प्रद्युत आचार्य (PhD in Vedic Jyotish)

आकाशीय ग्रह गोचर दर्पण

आगामी 2 वर्षों का राशि परिवर्तन एवं भाव विश्लेषण

मार्च 2027

10 मार्च	मंगल	सिंह → कर्क	१ला भाव
12 मार्च	बुध	मकर → कुंभ	८वाँ भाव
15 मार्च	सूर्य	कुंभ → मीन	९वाँ भाव
21 मार्च	शुक्र	मकर → कुंभ	८वाँ भाव

अप्रैल 2027

5 अप्रैल	बुध	कुंभ → मीन	९वाँ भाव
14 अप्रैल	सूर्य	मीन → मेष	१०वाँ भाव
15 अप्रैल	शुक्र	कुंभ → मीन	९वाँ भाव
22 अप्रैल	बुध	मीन → मेष	१०वाँ भाव
26 अप्रैल	मंगल	कर्क → सिंह	२रा भाव

मई 2027

6 मई	बुध	मेष → वृषभ	११वाँ भाव
10 मई	शुक्र	मीन → मेष	१०वाँ भाव
15 मई	सूर्य	मेष → वृषभ	११वाँ भाव
23 मई	बुध	वृषभ → मिथुन	१२वाँ भाव

जून 2027

3 जून	शनि	मीन → मेष	१०वाँ भाव
4 जून	शुक्र	मेष → वृषभ	११वाँ भाव
15 जून	सूर्य	वृषभ → मिथुन	१२वाँ भाव
26 जून	बृहस्पति	कर्क → सिंह	२रा भाव
28 जून	शुक्र	वृषभ → मिथुन	१२वाँ भाव

जुलाई 2027

5 जुलाई	मंगल	सिंह → कन्या	३रा भाव
17 जुलाई	सूर्य	मिथुन → कर्क	१ला भाव
23 जुलाई	शुक्र	मिथुन → कर्क	१ला भाव
30 जुलाई	बुध	मिथुन → कर्क	१ला भाव

MyAstrology • डॉ. प्रद्युत आचार्य (PhD in Vedic Jyotish)

आकाशीय ग्रह गोचर दर्पण

आगामी 2 वर्षों का राशि परिवर्तन एवं भाव विश्लेषण

अगस्त 2027

14 अगस्त	बुध	कर्क → सिंह	२रा भाव
16 अगस्त	शुक्र	कर्क → सिंह	२रा भाव
17 अगस्त	सूर्य	कर्क → सिंह	२रा भाव
24 अगस्त	मंगल	कन्या → तुला	४था भाव
31 अगस्त	बुध	सिंह → कन्या	३रा भाव

सितंबर 2027

9 सितंबर	शुक्र	सिंह → कन्या	३रा भाव
17 सितंबर	सूर्य	सिंह → कन्या	३रा भाव
21 सितंबर	बुध	कन्या → तुला	४था भाव

अक्तूबर 2027

3 अक्तूबर	शुक्र	कन्या → तुला	४था भाव
8 अक्तूबर	मंगल	तुला → वृश्चिक	५वाँ भाव
18 अक्तूबर	सूर्य	कन्या → तुला	४था भाव
20 अक्तूबर	शनि	मेष → मीन	९वाँ भाव
21 अक्तूबर	बुध	तुला → कन्या	३रा भाव
27 अक्तूबर	शुक्र	तुला → वृश्चिक	५वाँ भाव

नवंबर 2027

5 नवंबर	बुध	कन्या → तुला	४था भाव
17 नवंबर	सूर्य	तुला → वृश्चिक	५वाँ भाव
18 नवंबर	मंगल	वृश्चिक → धनु	६ठा भाव
21 नवंबर	शुक्र	वृश्चिक → धनु	६ठा भाव
26 नवंबर	बुध	तुला → वृश्चिक	५वाँ भाव
26 नवंबर	बृहस्पति	सिंह → कन्या	३रा भाव

MyAstrology • डॉ. प्रद्युत आचार्य (PhD in Vedic Jyotish)

आकाशीय ग्रह गोचर दर्पण

आगामी 2 वर्षों का राशि परिवर्तन एवं भाव विश्लेषण

दिसंबर 2027

15 दिसंबर	बुध	वृश्चिक → धनु	६ठा भाव
15 दिसंबर	शुक्र	धनु → मकर	७वाँ भाव
16 दिसंबर	सूर्य	वृश्चिक → धनु	६ठा भाव
27 दिसंबर	मंगल	धनु → मकर	७वाँ भाव

जनवरी 2028

2 जनवरी	बुध	धनु → मकर	७वाँ भाव
8 जनवरी	शुक्र	मकर → कुंभ	८वाँ भाव
15 जनवरी	सूर्य	धनु → मकर	७वाँ भाव

फरवरी 2028

2 फरवरी	शुक्र	कुंभ → मीन	९वाँ भाव
3 फरवरी	मंगल	मकर → कुंभ	८वाँ भाव
13 फरवरी	सूर्य	मकर → कुंभ	८वाँ भाव
23 फरवरी	शनि	मीन → मेष	१०वाँ भाव
28 फरवरी	बृहस्पति	कन्या → सिंह	२रा भाव
28 फरवरी	शुक्र	मीन → मेष	१०वाँ भाव

मार्च 2028

9 मार्च	बुध	मकर → कुंभ	८वाँ भाव
12 मार्च	मंगल	कुंभ → मीन	९वाँ भाव
14 मार्च	सूर्य	कुंभ → मीन	९वाँ भाव
28 मार्च	बुध	कुंभ → मीन	९वाँ भाव
28 मार्च	शुक्र	मेष → वृषभ	११वाँ भाव

अप्रैल 2028

12 अप्रैल	बुध	मीन → मेष	१०वाँ भाव
13 अप्रैल	सूर्य	मीन → मेष	१०वाँ भाव
20 अप्रैल	मंगल	मीन → मेष	१०वाँ भाव
27 अप्रैल	बुध	मेष → वृषभ	११वाँ भाव

MyAstrology • डॉ. प्रद्युत आचार्य (PhD in Vedic Jyotish)

आकाशीय ग्रह गोचर दर्पण

आगामी 2 वर्षों का राशि परिवर्तन एवं भाव विश्लेषण

मई 2028

14 मई	सूर्य	मेष → वृषभ	११वाँ भाव
31 मई	मंगल	मेष → वृषभ	११वाँ भाव

जून 2028

15 जून	सूर्य	वृषभ → मिथुन	१२वाँ भाव
23 जून	राहु	मकर → धनु	६ठा भाव

जुलाई 2028

5 जुलाई	बुध	वृषभ → मिथुन	१२वाँ भाव
12 जुलाई	मंगल	वृषभ → मिथुन	१२वाँ भाव
16 जुलाई	सूर्य	मिथुन → कर्क	१ला भाव
21 जुलाई	बुध	मिथुन → कर्क	१ला भाव
24 जुलाई	बृहस्पति	सिंह → कन्या	३रा भाव

अगस्त 2028

1 अगस्त	शुक्र	वृषभ → मिथुन	१२वाँ भाव
5 अगस्त	बुध	कर्क → सिंह	२रा भाव
16 अगस्त	सूर्य	कर्क → सिंह	२रा भाव
23 अगस्त	बुध	सिंह → कन्या	३रा भाव
26 अगस्त	मंगल	मिथुन → कर्क	१ला भाव
31 अगस्त	शुक्र	मिथुन → कर्क	१ला भाव

सितंबर 2028

16 सितंबर	सूर्य	सिंह → कन्या	३रा भाव
27 सितंबर	शुक्र	कर्क → सिंह	२रा भाव

MyAstrology • डॉ. प्रद्युत आचार्य (PhD in Vedic Jyotish)

🌐 K.P. पद्धति — कृष्णमूर्ति नक्षत्र सब-लॉर्ड विश्लेषण

🕒 KP दशा समय-निर्धारण विश्लेषण

वर्तमान महादशा: **बृहस्पति** (15.5/16.0 वर्ष) | अंतर्दशा: **राहु**

✓ दोनों दशाएँ सक्रिय — अभी संभव:

विदेश/यात्रा

आंशिक सक्रिय (अंतर्दशा बदलने पर पूर्ण होगा):

संतान

कर्म/पदोन्नति

गृह/संपत्ति

स्वास्थ्य

🏛️ कस्प सब-लॉर्ड विश्लेषण (मुख्य भाव)

KP नियम: कस्प सब-लॉर्ड जिस भाव का सूचक होता है, उसी भाव का फल निश्चित होता है।

1ला कस्प — व्यक्तित्व

सब-लॉर्ड: **राहु**

ग्रह भाव: 9वाँ

सशर्त

2रा कस्प — धन

सब-लॉर्ड: **केतु**

ग्रह भाव: 3रा

सशर्त

5वाँ कस्प — संतान/विद्या

सब-लॉर्ड: **राहु**

ग्रह भाव: 9वाँ

✓ प्रतिश्रुति

7वाँ कस्प — विवाह

सब-लॉर्ड: **राहु**

ग्रह भाव: 9वाँ

सशर्त

10वाँ कस्प — कर्म

सब-लॉर्ड: **केतु**

ग्रह भाव: 3रा

✓ प्रतिश्रुति

11वाँ कस्प — लाभ

सब-लॉर्ड: **राहु**

ग्रह भाव: 9वाँ

सशर्त

KP पद्धति में प्रत्येक ग्रह के **नक्षत्र-स्वामी** एवं **सब-लॉर्ड** से घटना का सुनिश्चित समय निर्धारित होता है।

ग्रह	भाव	नक्षत्र	नक्षत्र-स्वामी	सब-लॉर्ड ★
लग्न	1ला	आश्लेषा	बुध	राहु
सूर्य	4था	स्वाती	राहु	बुध
चंद्र	3रा	चित्रा	मंगल	राहु
मंगल	7वाँ	श्रवण	चंद्र	केतु
बुध	5वाँ	अनुराधा	शनि	शनि
बृहस्पति R MD	8वाँ	शतभिषा	राहु	मंगल
शुक्र R	4था	विशाखा	बृहस्पति	शनि
शनि	5वाँ	अनुराधा	शनि	राहु
राहु AD	9वाँ	रेवती	बुध	राहु
केतु	3रा	चित्रा	मंगल	राहु

KP भाव सूचक (सिग्निफिकेटर)

भाव में स्थित ग्रह, भाव-स्वामी एवं उनके नक्षत्र में स्थित ग्रह — ये सब मिलकर उस भाव के सूचक होते हैं।

1ला — स्वास्थ्य·व्यक्तित्व स्वामी: चंद्र चंद्र मंगल	2रा — धन·परिवार स्वामी: सूर्य सूर्य	3रा — पराक्रम·भ्राता स्वामी: बुध चंद्र केतु बुध मंगल राहु ·	4था — गृह·माता स्वामी: शुक्र सूर्य शुक्र
5वाँ — संतान·विद्या स्वामी: मंगल बुध शनि मंगल राहु · चंद्र केतु	6ठा — रोग·शत्रु स्वामी: बृहस्पति बृहस्पति ★ शुक्र	7वाँ — विवाह·जीवनसाथी स्वामी: शनि मंगल शनि चंद्र केतु बुध	8वाँ — आयु·मृत्यु स्वामी: शनि बृहस्पति ★ शनि शुक्र बुध
9वाँ — भाग्य·धर्म स्वामी: बृहस्पति राहु · बृहस्पति ★ सूर्य शुक्र	10वाँ — कर्म·यश स्वामी: मंगल मंगल चंद्र केतु	11वाँ — लाभ·आय स्वामी: शुक्र शुक्र	12वाँ — व्यय·मोक्ष स्वामी: बुध बुध राहु ·

KP मूल विचार

विवाह योग प्रतीक्षा में

2/7/11 भाव के सूचक सक्रिय होने पर विवाह संभव है।

बृहस्पति ★ सूर्य मंगल शनि चंद्र केतु बुध शुक्र

संतान योग आंशिक

2/5/11 भाव के सूचक सक्रिय होने पर संतान लाभ संभव है।

सूर्य बुध शुक्र शनि मंगल राहु · चंद्र केतु

कर्मक्षेत्र/पदोन्नति आंशिक

6/10/11 भाव के सूचक सक्रिय होने पर पदोन्नति संभव है।

बृहस्पति ★ शुक्र मंगल चंद्र केतु

गृह/संपत्ति लाभ आंशिक

4/11/12 भाव के सूचक सक्रिय होने पर गृह लाभ संभव है।

सूर्य शुक्र बुध राहु ·

विदेश/यात्रा योग ✓ दशा सक्रिय

3/9/12 भाव के सूचक सक्रिय होने पर विदेश/यात्रा संभव है।

चंद्र मंगल शनि राहु · केतु बुध बृहस्पति ★ सूर्य

KP पद्धति का सार: प्रत्येक ग्रह का सब-लॉर्ड निर्धारित करता है कि वह किस भाव का फल देगा। घटना तब घटती है जब: (1) कस्प सब-लॉर्ड संबंधित भाव का सूचक हो, (2) वर्तमान महादशा एवं अंतर्दशा के ग्रह उसी भाव के सूचक हों। तारा (★) = महादशा स्वामी, बिंदु (·) = अंतर्दशा स्वामी।

☆ सामान्य विशेषताएँ

मूल जानकारी:

लग्न: कर्क | गण: राक्षस

जन्म नक्षत्र: चित्रा — 1वाँ पाद

चंद्र राशि: कन्या | सूर्य राशि: तुला

तिथि: कृष्ण चतुर्दशी | करण: विष्टि

★ लग्न फलादेश (कर्क):

आपका लग्न कर्क राशि है। आपके शरीर एवं बाह्य सत्ता की नींव मन के अधिपति चंद्र के कोमल प्रकाश में रखी गई है। चंद्र ने आपको गहरी भावना, स्नेह, कल्पनाशक्ति एवं एक संवेदनशील मन दिया है।

इस लग्न के प्रभाव से आपके शरीर की बनावट प्रायः मध्यम, कोमल एवं गोल चेहरे वाली होती है। आपकी आँखें उज्ज्वल एवं भावपूर्ण होती हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से आप पेट की समस्या, गैस्ट्रिक, पाचन की गड़बड़ी या जलजनित रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। मानसिक उतार-चढ़ाव आपके शरीर पर असर डालता है, इसलिए मन की देखभाल आपके लिए अत्यंत आवश्यक है।

बाहरी जगत में आप एक स्नेहशील, यत्नवान एवं कुछ संकोची व्यक्ति के रूप में दिखाई देते हैं। परिवार और घर से आपको गहरा लगाव है और अपनों के लिए आप बहुत कुछ त्यागने को तैयार रहते हैं। आपकी स्मृति प्रखर है और अतीत को आप सहज नहीं भूल पाते। यही भावुकता और संवेदनशीलता आपकी सबसे बड़ी शक्ति है, परंतु इस पर नियंत्रण न रहे तो आप सहज ही आहत होकर स्वयं को समेट लेते हैं। थोड़ा कठोर आवरण बनाना सीखिए।

★ नक्षत्र फलादेश (चित्रा):

आपका चंद्रमा चित्रा नक्षत्र में कन्या राशि में स्थित है। चित्रा का स्वामी मंगल है और राशि का स्वामी बुध है। आप राक्षसगण में शामिल हैं।

चित्रा नक्षत्र के कलाकार मन के प्रभाव से आपका व्यक्तित्व जैसे किसी चित्रकार के ब्रश के स्पर्श की तरह सुंदर बनकर खिला है। चित्रा नक्षत्र के देवता त्वष्टा या विश्वकर्मा हैं—जो स्वर्ग के स्थापत्यकार और कारीगरों के देवता हैं। इस नक्षत्र के प्रभाव से आप असाधारण सृजनशीलता, निर्माण क्षमता और सौंदर्यबोध के स्वामी हैं। आप चीज़ों को सुंदरता से सजाना पसंद करते हैं। आपकी आँखें सौंदर्य के प्रति अत्यंत संवेदनशील हैं।

इस सृजनशीलता के साथ-साथ राशि के स्वामी बुध के शुभ प्रभाव से आप अत्यंत बुद्धिमान, विश्लेषणात्मक और संवाद में कुशल हैं। आप किसी भी चीज़ को हल्के में नहीं लेते—हर चीज़ को बारीकी से देखते हैं, विश्लेषण करते हैं। साथ ही आपके नक्षत्र के स्वामी मंगल के शुभ प्रभाव से आप साहसी, कर्मठ और तेज़ी से निर्णय ले सकते हैं। आप केवल सुंदर चीज़ों की योजना नहीं बनाते, उन्हें साकार करने का साहस भी रखते हैं।

इस राशि का प्रतीक चिह्न कुमारी कन्या है। जैसे कुमारी कन्या पवित्रता, सेवा और निष्ठा का प्रतीक है, वैसे ही आप स्वभाव से सेवाभावी और समर्पित हैं। इस प्रतीक के शुभ प्रभाव से आप साफ़-सफ़ाई और व्यवस्था पसंद करते हैं। इस राशि का तत्त्व पृथ्वी है—जो स्थिरता, धैर्य और व्यावहारिकता का प्रतीक है। इस तत्त्व के शुभ प्रभाव से आप यथार्थवादी हैं और ज़मीन से जुड़े रहते हैं। और यह राशि द्विस्वभाव प्रकृति की होने के कारण आप परिस्थिति के अनुसार स्वयं को बदल सकते हैं।

इतने सारे शुभ प्रभावों ने मिलकर आपको सचमुच एक असाधारण इंसान बना दिया है।

लेकिन चित्रा नक्षत्र की यह सृजनशीलता जब कन्या राशि की आलोचनाप्रियता के

साथ मिलती है, तब कुछ बेचैनी उत्पन्न होती है—जिसे नियंत्रित कर लेने पर आपकी रचना सचमुच विश्वकर्मा जैसी होगी।

आपके नक्षत्र के देवता विश्वकर्मा के अशुभ प्रभाव से कभी-कभी अपनी ही रचना पर अत्यधिक गर्व होता है—लगता है, "मुझसे बेहतर कोई नहीं बना सकता"। इस प्रभाव से दूसरों की रचना की आलोचना करने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। राशि के स्वामी बुध जब अशुभ प्रभाव डालते हैं, तब अत्यधिक सोच और चिंता उत्पन्न होती है—एक ही विषय पर बार-बार सोचते-सोचते मानसिक थकान आ जाती है। नक्षत्र के स्वामी मंगल जब उग्रता का प्रभाव डालते हैं, तब अधीरता आती है—काम पूरा होने से पहले ही परिणाम देखना चाहते हैं।

इस राशि के प्रतीक कुमारी कन्या का अपरिपक्व पक्ष है—अत्यधिक नुक्ताचीनी। इस प्रतीक के अशुभ प्रभाव से आप अपनी ही रचना में छोटी-छोटी कमियाँ खोजते हैं और असंतुष्ट हो जाते हैं। पृथ्वी तत्त्व की राशि जब नियंत्रण खो देती है, तब यह स्थिरता जड़ता में बदल जाती है—बदलाव से डरने की प्रवृत्ति होती है। द्विस्वभाव प्रकृति की राशि जब नियंत्रण से बाहर हो जाती है, तब चरित्र की असंगति दिखती है। और राक्षसगण के अशुभ प्रभाव से अपने स्वार्थ को सबसे ऊपर रखने की प्रवृत्ति होती है।

ये अवगुण नक्षत्र और राशि के प्रभाव से उत्पन्न हुए हैं—लेकिन ये स्थायी नहीं हैं। आप चाहें तो इनके प्रति सचेत होकर बदलाव ला सकते हैं।

महान इतालवी कलाकार और दार्शनिक **लियोनार्डो दा विंची** ने कहा था:

"सरलता ही चरम परिष्कार है।"

अपनी सृजनशीलता को सरलता दें। हर चीज़ को जटिल बनाने की ज़रूरत नहीं है। अपनी आलोचनाप्रियता को संयमित करें—अपनी रचना को भी थोड़ी छूट दें, दूसरों की रचना का भी सम्मान करें। आप कर सकते हैं। अपने भीतर के मंगल के साहस और बुध की बुद्धि से आप सचमुच विश्वकर्मा जैसी रचना कर सकते हैं।

योग में जन्म का फल (विष्कुम्भ):

आपका जन्म विष्कुम्भ योग में हुआ है। यह सत्ताईस योगों में प्रथम योग है। इस योग के देवता स्वयं विष्णु हैं।

विष्कुम्भ योग के प्रभाव से आपमें स्थिरता एवं शक्ति का एक अद्भुत समन्वय हुआ है। आप जितने धैर्यशील एवं शांत हैं, उतने ही आवश्यकता पड़ने पर अत्यंत शक्तिशाली एवं दृढ़प्रतिज्ञ हो सकते हैं। आपके व्यक्तित्व में एक राजसी भाव है, जो लोगों को आपकी ओर आकर्षित करता है। आप परिवार एवं समाज के प्रति गहन उत्तरदायी हैं। आपकी उपस्थिति में लोग सुरक्षा का अनुभव करते हैं। आप सहज ही किसी पर विश्वास नहीं करते, किंतु एक बार किसी को अपना मान लेने पर उसे कभी नहीं छोड़ते।

इस योग के प्रभाव से आप सामान्यतः धनी एवं समाज में सम्मानित होते हैं। आपमें धर्म एवं नीति-नैतिकता के प्रति गहन श्रद्धा है। आप किसी अन्याय से जुड़ नहीं सकते, बल्कि अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस रखते हैं।

तथापि विष्कुम्भ योग का एक विशेष पक्ष यह है कि इसके प्रभाव से आप कभी-कभी अपने ही मन में एक घुटन अथवा दबा हुआ तनाव अनुभव कर सकते हैं। बहुत कुछ आपको ज्ञात रहता है, किंतु आप उसे सहज ही प्रकट करना नहीं चाहते। इससे आपके मन पर दबाव बनता है। जीवन में जब देखें कि भीतर से मन अशांत है, जबकि बाहर से आप शांत प्रतीत होते हैं, तब समझिए इस योग का प्रभाव कार्य कर रहा है।

ऐसे समय स्वयं को थोड़ा प्रकट करना सीखिए। अपने किसी विश्वस्त व्यक्ति से मन की बात

कहिए। देखेंगे मन हल्का हो जाएगा। स्मरण रखें, विष्णु केवल पालनकर्ता ही नहीं, वे जगत् का समस्त भार स्वयं पर लेते हैं। आपको भी अपने मन का भार कुछ हल्का करना चाहिए। इस योग के प्रभाव से आपका जीवन सामान्यतः सुख एवं समृद्धि का होता है, यदि आप भीतर के दबाव को नियंत्रित कर सकें।

सूर्य नक्षत्र/माह जन्म फल:

कार्तिक मास के मध्य भाग में आपका इस पृथ्वी पर पदार्पण हुआ, जब सूर्य तुला राशि की स्वाति नक्षत्र में स्थित होकर एक मुक्त वायु का स्वाद दे रहे थे। यह सूर्य के लिए एक दुर्बल स्थिति है, जहाँ उनका तेज लगभग बुझ जाता है। इस परिस्थिति ने आपकी अंतरात्मा में एक स्वतंत्रचेता मनोभाव, लचीलापन और व्यापारिक बुद्धि का संचार किया है। आपके भीतर का पुरुष बँधकर नहीं रह सकता; वह सदैव कुछ नया जानने, नई जगह जाने को इच्छुक रहता है और आसानी से किसी भी वातावरण में ढल सकता है। स्वाति नक्षत्र के वायुदेवता की भाँति आप मुक्त विचरण पसंद करते हैं। तुला राशि के प्रभाव से यह स्वतंत्रता अकेले नहीं, बल्कि संबंधों के माध्यम से प्रकट होना चाहती है। आपके आत्मविश्वास का स्रोत आपकी यह अनुकूलन-क्षमता और व्यापारिक बुद्धि है। आप जानते हैं कि आप किसी भी परिस्थिति में स्वयं को ढाल सकते हैं और लाभ का मार्ग खोज सकते हैं। परंतु यह अत्यधिक स्वतंत्रता कहीं आपको दायित्वहीन या अस्थिर न बना दे, इस पर सजग रहना आवश्यक है। आपका नेतृत्व गतिशील और अनुकूलनशील होगा, जिसमें आप बदलती परिस्थितियों में शीघ्र सही निर्णय ले सकेंगे।

तिथि फलादेश (कृष्ण चतुर्दशी):

आपका जन्म कृष्ण चतुर्दशी तिथि को हुआ है। इस तिथि के देवता शिव हैं। शिव जैसे त्याग, ध्यान और आध्यात्मिकता का प्रतीक हैं, वैसे ही आपका मन भी गहरी आध्यात्मिक सोच में डूबा रहना पसंद करता है। लेकिन कृष्ण पक्ष के प्रभाव के कारण आप अपनी आध्यात्मिकता का गुप्त रूप से अभ्यास करते हैं - आपको देखकर कोई यह नहीं समझ सकता कि आप कितने गहरे हैं। आप एकांत में ध्यान करते हैं, अकेले सोचते हैं। कृष्ण पक्ष के प्रभाव से आप स्वभाव से चालाक, चतुर और बुद्धिमान हैं।

लेकिन चंद्रमा अब बहुत क्षीण है, अमावस्या के ठीक पहले। इसलिए आपकी यह गहराई और अकेलापन कभी-कभी गहरी उदासी में बदल जाता है। आप खुद में इतने डूब जाते हैं कि बाहरी दुनिया बेमानी लगने लगती है। जीवन में जब आप देखें कि आपका मन क्रमशः भारी हो रहा है, या किसी चीज में मन नहीं लग रहा है, या आप सब कुछ छोड़ देना चाहते हैं, तो रुकें। किसी जीवंत और सकारात्मक व्यक्ति के साथ समय बिताएं। उनका उत्साह आपके मन को हल्का करेगा। याद रखें, अमावस्या के बाद फिर से चांद उगता है।

उपाय के रूप में आप 14 मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं। यह शिव का प्रतीक है। यह रुद्राक्ष आपकी मानसिक शांति और आध्यात्मिकता बढ़ाएगा तथा उदासी दूर करेगा। सोमवार की सुबह गंगाजल से धोकर सफेद या काले धागे में गले में धारण करें। 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जाप करें।

करण फलादेश (विष्टि):

आपका जन्म विष्टि करण में हुआ है। यह ग्यारह करणों में सप्तम है और यह एक स्थिर करण है। इस करण के देवता यम हैं।

विष्टि करण के प्रभाव से आपके काम करने का ढंग कष्टसाध्य है — दबाव में रहकर भी पूरा कर लेने वाला। आप जब कोई काम करते हैं, उसमें बाधा आएगी ही — मानो यह आपकी नियति हो। आपको कुछ भी सहज नहीं मिलेगा, हर वस्तु के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। किंतु यही परिश्रम आपको भीतर से तपा हुआ, अनुभवी एवं सशक्त बना देता है। आप कष्टसाध्य अथवा रात्रि के कार्यों में, सेवामूलक कार्यों में अथवा स्वच्छता संबंधी कार्यों में सफलता पा सकते हैं।

यम के प्रभाव से आप जीवन के कठोर सत्यों को बहुत निकट से देखते हैं। आप मृत्यु एवं रूपांतरण का अर्थ समझते हैं।

किंतु विष्टि करण का एक विशेष पक्ष यह है कि इसके प्रभाव से आप कभी-कभी निराशा अथवा कष्ट में ही डूबे रहते हैं। आप सोचने लगते हैं, "मेरे भाग्य में तो केवल कष्ट ही लिखा है।" यह मनोवृत्ति आपको और दुर्बल कर देती है। जीवन में जब देखें कि आपके परिश्रम का फल

आपको नहीं मिल रहा, अथवा आपका कष्ट कोई देख नहीं रहा, तब हार न मानें। स्मरण रखें, यम न्याय के देवता हैं, वे कभी किसी का प्राप्य रोककर नहीं रखते। आपके कष्ट का मूल्य एक दिन आपको अवश्य मिलेगा। धैर्य रखें।

वक्री ग्रह पूर्वजन्म के अधूरे कर्म का संकेत देता है। इस ग्रह के भाव में जीवन में बार-बार परीक्षा आती है, किंतु गहरी साधना से यही सबसे बड़ी शक्ति बन जाता है।

बृहस्पति वक्री

कुंभ — 8वें भाव

ज्ञान, धर्म, संतान, गुरु

बृहस्पति वक्री होने से ज्ञान और धर्मबोध आंतरिक मार्ग से विकसित होते हैं। प्रचलित धर्माचरण के बजाय अपना आध्यात्मिक मार्ग खोजने की प्रवृत्ति रहती है। गुरु या शिक्षक के साथ संबंध जटिल हो सकता है। दीर्घकाल में ज्ञान की गहराई असाधारण होगी।

8वें भाव में विशेष फल:

अष्टम भाव में वक्री बृहस्पति — दीर्घायु किंतु स्वास्थ्य में सावधानी आवश्यक। परलोक एवं रहस्यमय ज्ञान में गहन रुचि। उत्तराधिकार से संपत्ति आ सकती है। धार्मिक दृष्टि में मृत्यु का भय नहीं।

उपाय: बृहस्पतिवार को विष्णु पूजा करें। पीला वस्त्र और केला दान करें। गुरुजनों की सेवा करें।

शुक्र वक्री

तुला — चौथे भाव

प्रेम, सौंदर्य, विवाह, कला

शुक्र वक्री होने से प्रेम और सौंदर्यबोध स्वाभाविक मार्ग से प्रकट नहीं होते। गहरी अनुभूति भीतर ही रह जाती है। संबंधों पर अतीत की अपूर्णता की छाया रह सकती है। कलाओं में असाधारण सृजनशीलता देता है।

चौथे भाव में विशेष फल:

चतुर्थ भाव में वक्री शुक्र — गृहसज्जा में अनोखी रुचि। माता से संबंध में ऊष्मा किंतु भीतर मतभेद। घर को सुंदर एवं आरामदायक बनाने की इच्छा। मन की शांति हेतु सुंदर वातावरण आवश्यक।

उपाय: शुक्रवार को लक्ष्मी पूजा करें। सफेद वस्त्र और चीनी दान करें। संबंधों में सच्चाई बनाए रखें।

♌ जैमिनी चर कारक

आत्मकारक: चंद्र (कन्या • 24.51°)

चंद्र आत्मकारक — इस जन्म में आत्मा का पाठ है मातृ-करुणा में स्वयं को समर्पित कर देना।

मानवीय जुड़ाव, भावनात्मक सच्चाई और अंतर्दृष्टि में आत्मा की परिपूर्णता है।

चंद्र की चंचलता को जीतकर मन को स्थिर करना ही इस आत्मा की साधना है।

मानसिक शांति और गृहसुख में तृप्ति मिलती है — और परिवार तथा समाज की सेवा में परम मुक्ति।

कारक	ग्रह	राशि	अंश	कारकत्व
आत्मकारक (AK)	चंद्र	कन्या	24.51°	आत्मा • जीवन का मूल उद्देश्य • व्यक्तित्व का केंद्र
अमात्यकारक (AmK)	शुक्र	तुला	21.79°	पेशा • जीविका • मंत्री-सदृश सहायक
भ्रातृकारक (BK)	मंगल	मकर	19.75°	भाई-बहन • साहस • उद्यम • पराक्रम
मातृकारक (MK)	बृहस्पति	कुंभ	19.40°	माता • गृहसुख • मानसिक शांति • स्थावर संपत्ति
पुत्रकारक (PK)	शनि	वृश्चिक	14.64°	संतान • पूर्वपुण्य • बुद्धि • निवेश
ज्ञातिकारक (GK)	सूर्य	तुला	14.37°	सगे-संबंधी • शत्रु • बाधाएँ
दारकारक (DK)	बुध	वृश्चिक	5.34°	जीवनसाथी • विवाह • व्यावसायिक साझेदार

जैमिनी राशि दृष्टि (Rashi Drishti)

चर राशि (मेष • कर्क • तुला • मकर) — स्थिर राशियों पर दृष्टि डालती हैं (निकटवर्ती को छोड़कर)।

स्थिर राशि (वृषभ • सिंह • वृश्चिक • कुंभ) — चर राशियों पर दृष्टि डालती हैं (निकटवर्ती को छोड़कर)।

द्विस्वभाव राशि (मिथुन • कन्या • धनु • मीन) — परस्पर दृष्टि डालती हैं (निकटवर्ती को छोड़कर)।

→ पराशरी दृष्टि के विपरीत जैमिनी दृष्टि राशि-आधारित है — ग्रह की स्थिति नहीं, राशि ही महत्वपूर्ण है।

अन्य कारकों का संक्षिप्त निर्देशन

अमात्यकारक (शुक्र): आपके पेशे एवं कर्मजीवन का मार्गदर्शन इस ग्रह की राशि एवं भाव से विचारा जाएगा।

दाराकारक (बुध): जीवनसाथी का स्वभाव एवं विवाह-संबंधी संकेत यह ग्रह देता है। दाराकारक जिस राशि में हो — उस राशि के गुण साथी में रहेंगे।

ॐ नामकरण — जन्म नक्षत्र के अक्षर

जन्म नक्षत्र

चित्रा

पाद

प्रथम पाद

नामाक्षर

पे

नामकरण विधि: ज्योतिष शास्त्र के अनुसार "पे" अक्षर से आरंभ होने वाला नाम शुभ एवं शास्त्रसम्मत है — नाम का अक्षर जन्म नक्षत्र एवं पाद के अनुसार निर्धारित होता है। जातक का नाम **Rudra** पहले से रखा जा चुका हो तो चिंता की कोई बात नहीं — यह अक्षर केवल एक पारंपरिक दिशानिर्देश है; उपनाम, मध्यनाम अथवा गोत्रनाम में इस अक्षर का प्रयोग कर भी इसका शुभ फल प्राप्त होता है। नीचे इस नक्षत्र के सभी पादों के अक्षर भी दिए गए हैं।

समस्त पादों के अक्षर (चित्रा): **प्रथम पाद:** पे **द्वितीय पाद:** पो **तृतीय पाद:** रा **चतुर्थ पाद:** री

जीवन विश्लेषण

जीवन के 5 क्षेत्रों का ज्योतिषीय विश्लेषण

आयु: 39 वर्ष – गृहस्थ आश्रम

● कर्म

★ असाधारण

आपका कर्मजीवन अत्यंत सफल एवं सम्मानजनक होगा। दशमेश मंगल अत्यंत बलवान स्थिति में हैं – वे सप्तम भाव में, मकर राशि में स्थित हैं। मंगल उच्च के हैं – यह राजयोग का संकेत है। अपने कर्मक्षेत्र में आप अप्रतिद्वंद्वी बनकर उभरेंगे।

मिश्र – नौकरी एवं व्यापार दोनों सम्भव, अथवा फ़्रीलांसिंग – ये आपके लिए सर्वाधिक उपयुक्त पेशे हैं। कर्मक्षेत्र में आपको उच्च पद, सम्मान एवं मान्यता प्राप्त होगी। आपका नेतृत्व-गुण इतना स्पष्ट होगा कि सहकर्मी आपका अनुसरण करेंगे और वरिष्ठ आप पर भरोसा रखेंगे।

परन्तु सफलता अहंकार न लाए। सूर्य के समान विनयी रहकर प्रकाश फैलाएँ। आपकी सफलता से दूसरे भी आलोकित हों – यही आपके जीवन का सबसे बड़ा कर्मयोग है।

उपयुक्त पेशा: मिश्र – नौकरी एवं व्यापार दोनों सम्भव, अथवा फ़्रीलांसिंग

♡ दांपत्य

✓ सुखद

दाम्पत्य जीवन सामान्यतः सुखी रहेगा। कुछ मतभेद रहेंगे, किन्तु वे सम्बन्ध को परिपक्व बनाएँगे। सप्तमेश शनि पंचम भाव में हैं।

शुक्र चतुर्थ भाव में — प्रेम के कारक पर्याप्त बलवान हैं। चंद्र तृतीय भाव में — भावनात्मक बन्धन मजबूत है।

मांगलिक दोष है — क्रोध पर नियंत्रण रखें।

स्मरण रखें — अच्छा सम्बन्ध खेती के समान है, प्रतिदिन देखभाल करनी पड़ती है।

मांगलिक दोष: है

★ संतान

★ शुभ

सन्तान-सुख अत्यंत प्रसन्न है। पंचमेश मंगल सप्तम भाव में शुभ स्थिति में एवं बृहस्पति अष्टम भाव में, कुम्भ राशि में।

सन्तान आपके वृद्धावस्था की संगिनी होगी। वर्तमान दशा सन्तान-सुख के लिए अनुकूल है।

स्मरण रखें — सन्तान को संस्कार दें, मूल्यबोध दें; वही आपकी सच्ची विरासत है।

▲ आर्थिक

~ संघर्षपूर्ण

आर्थिक जीवन में कुछ कष्ट एवं संघर्ष रहेगा। द्वितीय अथवा एकादश भाव का स्वामी दुर्बल स्थिति में होने से सम्पत्ति अर्जन में बाधा आ सकती है।

प्रधान आय-स्रोत: व्यावसायिक कार्य एवं निवेश — सावधानी से आगे बढ़ें। सट्टेबाज़ी एवं अत्यधिक ऋण से दूर रहें।

स्मरण रखें — दक्षता एक बार अर्जित कर लें तो उसे कोई छीन नहीं सकता।

आय के स्रोत: व्यावसायिक कार्य एवं निवेश

स्वास्थ्य में विशेष सतर्कता आवश्यक है। लग्नेश चंद्र दुर्बल स्थिति में – तृतीय भाव में।

नियमित रूप से चिकित्सक की सलाह लें, पौष्टिक भोजन करें। स्मरण रखें – शरीर आत्मा का मंदिर है, उसकी देखभाल पहला कर्तव्य है।

यह विश्लेषण ज्योतिष की पारंपरिक पद्धति से तैयार है – यह मार्गदर्शन है, अंतिम निर्णय नहीं

🕒 प्रहर शास्त्रीय विश्लेषण

जन्म के वार एवं प्रहर के अनुसार शास्त्रीय विचार। वारेश एवं प्रहरेश के संयुक्त प्रभाव से जातक का स्वभाव, स्वास्थ्य, पेशा एवं दांपत्य निर्धारित होता है।

शुक्रवार

शुक्रवार, रात्रि/सप्तम प्रहर। वारेश: शुक्र। प्रहरेश: शनि। तत्त्व: जल-वायु मिश्र। गुण: तामसिक।

शुक्रवार रात्रि में जन्मा जातक/जातिका शुक्र-शनि के गहन प्रभाव से बनता है। देह में संधि एवं प्रजनन तंत्र की देखभाल आवश्यक है। स्वभाव एकाग्र एवं गुप्त विषयों में रुचि रखने वाला होता है। गुप्तकला, डिज़ाइन अथवा रात्रिकालीन कार्य में सफलता निर्दिष्ट है। संबंध गाढ़े रहते हैं, साथी पर पूर्ण विश्वास करने में समय लगता है। अप्रत्याशित आर्थिक लाभ का योग है। शुक्र एवं शनि मंत्र का जप विहित है।

दशाफल एवं उपाय

महादशाफल: बृहस्पति (16 वर्ष)

16.0 वर्ष में से 15.5 वर्ष व्यतीत

आपकी कुंडली में बृहस्पति अष्टम भाव में स्थित हैं, और इस समय बृहस्पति की महादशा चल रही है। अष्टम भाव रहस्य, मृत्यु एवं संयुक्त संपत्ति का स्थान है — गुरु ग्रह भी यहाँ आकर दुर्बल पड़ जाते हैं।

इस महादशा में आपको धनहानि का सामना करना पड़ सकता है — उत्तराधिकार अथवा पारिवारिक संपत्ति को लेकर विवाद बढ़ सकता है। श्वसुर अथवा ससुराल पक्ष से संबंध में गिरावट आ सकती है। गुप्त शत्रु सक्रिय हो उठेंगे, सहसा कोई बड़ा व्यय अथवा हानि हो सकती है।

तथापि अष्टम भाव रूपांतरण का भी प्रतीक है — यह हानि आपको नए सिरे से गढ़े जाने की शिक्षा देगी। बड़ा जोखिम न लें, निवेश से दूर रहें। उत्तराधिकार संबंधी कागजात व्यवस्थित रखें। दान, ध्यान एवं धार्मिक कार्यों में मन को शांति मिलेगी। बृहस्पतिवार को उपवास रखकर चना दान करें — बृहस्पति आपके रक्षाकवच बनेंगे।

शत्रुराशि की चुनौती:

बृहस्पति शत्रुराशि में (कुंभ) स्थित है — ग्रह यहाँ मानो प्रतिपक्ष के दुर्ग में बंदी है। अतः इस महादशा में प्रतिस्पर्धा एवं बाधा स्वाभाविक से अधिक आएगी — शत्रु सक्रिय होंगे, मार्ग में काँटे बिछाएँगे। किंतु शत्रुराशि की यही चुनौती आपकी छिपी हुई शक्ति को जाग्रत करेगी — जैसे दबाव में पड़कर ही कोयला हीरा बन जाता है। सचेत रहें, कुशल बनें — शत्रु के दुर्ग में ही आप अपनी विजय-पताका फहराएँगे।

आयु-संयोजन (मध्यवय — 31-50, गृहस्थ आश्रम): लघु पाराशरी एवं फलदीपिका के अनुसार बृहस्पति "धर्म-अर्थ-काम कारक" है — गृहस्थ आश्रम में उसकी महादशा चार पुरुषार्थों की सबसे संतुलित प्राप्ति का काल है। संतान प्राप्ति, व्यावसायिक सम्मान, न्याय एवं धार्मिकता का पुरस्कार एक साथ आते हैं। इस चरण में आप स्वयं दूसरों के गुरु होंगे — शिक्षक, परामर्शदाता अथवा न्यायकर्ता के रूप में समाज के प्रति दायित्व निभाएँ।

◆ बृहस्पति महादशा की समग्र यात्रा (16 वर्ष)

बृहस्पति देवगुरु हैं — धर्म, ज्ञान, संतान, समृद्धि एवं आध्यात्मिक उन्नयन के कारक। 16 वर्ष तक चलने वाली यह

महादशा जीवन में शुभ संयोग, प्रसार एवं ज्ञान का प्रकाश लाती है।

◆ प्रथम चरण (~7 वर्ष) — ज्ञान-कर्म का समन्वय एवं नींव निर्माण

अंतर्दशा: बृहस्पति / शनि / बुध

बृहस्पति की अपनी अंतर्दशा में धर्म, उच्च शिक्षा, गुरुकृपा एवं सामाजिक मर्यादा में शुभ विस्तार होता है। शनि की अंतर्दशा में गुरु-शनि के मेल से दीर्घकालिक योजना में कठोर परिश्रम का फल मिलता है। बुध की अंतर्दशा में व्यावसायिक विचक्षणता एवं संवाद के माध्यम से नए अवसर खुलते हैं।

◆ मध्यवर्ती चरण (~4.5 वर्ष) — आध्यात्मिक गहराई एवं जीवन की पूर्णता

अंतर्दशा: केतु / शुक्र / सूर्य

केतु की अंतर्दशा में बृहस्पति की ज्ञानसाधना गहरी होती है, मोक्षचिंतन एवं तीर्थयात्रा में रुचि जन्म लेती है। शुक्र की अंतर्दशा में विवाह, संपत्ति एवं सौंदर्य में शुभ फल आता है। सूर्य की अंतर्दशा में पितृतुल्य संबंध एवं अधिकार में उन्नति होती है।

◆ अंतिम चरण (~4.5 वर्ष) — परिपूर्णता एवं नए चक्र का आरंभ

अंतर्दशा: चंद्र / मंगल / राहु

चंद्र की अंतर्दशा में मानसिक शांति, मातृस्नेह एवं गृहसुख में परिपूर्णता आती है। मंगल की अंतर्दशा में साहस एवं उद्यम से नया कर्मपथ खुलता है। राहु की अंतर्दशा में बृहस्पति के ज्ञान एवं राहु की उच्चाकांक्षा के मेल से विदेशी अवसर एवं अप्रचलित मार्गों पर सफलता आती है — शनि की महादशा के लिए कार्मिक तैयारी पूर्ण होती है।

अंतर्दशाफल: बृहस्पति / राहु

🕒 इस अंतर्दशा की अवधि: 2 वर्ष 4 माह

बृहस्पति महादशा की अंतिम अंतर्दशा राहु की है। यह एक विलक्षण मेल का काल है—ज्ञान के प्रकाश के साथ माया के अंधकार का सम्मिश्रण। आप अब एक नए अध्याय के द्वार पर खड़े हैं। राहु के प्रभाव से आपकी महत्वाकांक्षा तीव्र होगी, किंतु बृहस्पति का ज्ञान आपको सही मार्ग दिखाएगा।

इस समय आप विदेश यात्रा, प्रौद्योगिकी अथवा अप्रचलित कार्य में सफलता पा सकते हैं। किंतु राहु के मायाजाल में न फँसें—किसी लुभावने प्रस्ताव को भली-भाँति परख लें। यह काल आपके लिए एक सेतु के समान है—जो बृहस्पति के ज्ञानमय जगत् से शनि के कर्ममय जगत् तक ले जाएगा। स्वयं को अगले अध्याय के लिए तैयार रखें।

आपकी कुंडली के अनुसार विशेष विचार:

- बृहस्पति (महादशेश) आठवें भाव में, कुंभ राशि में — त्रिक भाव — दशाफल में बाधा की संभावना
- राहु (अंतर्दशेश) नौवें भाव में, मीन राशि में — त्रिकोण भाव, शुभ स्थिति

प्रत्यंतर्दशाफल: सूर्य

वर्तमान में चल रही • बृहस्पति/राहु/सूर्य दशा

राहु की छलिया दुनिया में सूर्य का तेज एक तीव्र प्रकाश फैलाता है, लेकिन राहु उसे निगलना चाहता है। बृहस्पति और सूर्य मित्र हैं, इसलिए आपकी आत्मा का प्रकाश ही आपको बचाएगा। बाहरी दुनिया में प्रसिद्धि और सफलता के लिए ललायित रहेंगे, लेकिन तरीके सवालों के घेरे में होंगे। सत्ता का लालच रोकें। याद रखें, ग्रहण की योजना प्रकृति को नहीं हरा सकती—आपकी ईमानदारी ही वह अचूक हथियार होगी।

प्रत्यंतर्दशेश की कुंडली-विशेष स्थिति:

- सूर्य (प्रत्यंतर्दशेश) चौथे भाव में, तुला राशि में [नीचस्थ] — केंद्र भाव, शुभ स्थिति

◆ गोचर एवं दशा का समन्वय

आज की दिनांक के आधार पर

- ◆ गुरु का शुभ गोचर: बृहस्पति लग्न से प्रथम भाव में (कर्क) — त्रिकोण/लग्न गोचर में देवगुरु का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है।
- ◆ राहु-केतु गोचर: राहु इस समय कुंभ राशि में, केतु सिंह में। छायाग्रह की दशा में उसका अपना गोचर-स्थान विशेष महत्वपूर्ण होता है।

ग्रह उपाय — दो सबसे दुर्बल ग्रह (त्रिशक्ति)

बृहस्पति (षड्बल: 5.99 रूप)

पूजा: बृहस्पतिवार का व्रत रखें। विष्णु पूजा करें। 'ॐ बृं बृहस्पतये नमः' मंत्र का जप करें।

दान: पीला वस्त्र, चने की दाल, किताबें, धार्मिक ग्रंथ दान करें।

सेवा: बृहस्पति के लिए सबसे बड़ा उपाय है गुरु, शिक्षक, पुरोहित या धार्मिक व्यक्तियों का यथोचित सम्मान एवं सेवा। आजकल हम गुरु का मूल्य भूलते जा रहे हैं — जिस शिक्षक ने हमारे जीवन की नींव रखी, उन्हें हम याद नहीं रखते। आप अपने जीवन के किसी शिक्षक को खोजिए, उनके चरण छूड़िए, उनका आशीर्वाद लीजिए। यदि कोई पुरोहित या धार्मिक व्यक्ति अभाव में हों, तो उनकी सहायता कीजिए। किसी गुरु या शिक्षक के सम्मान में एक छोटा आयोजन कीजिए — इसी से बृहस्पति प्रसन्न होंगे। ज्ञान एवं धर्म के प्रति श्रद्धा दिखाना ही बृहस्पति का सबसे बड़ा उपाय है।

लाल किताब: हर बृहस्पतिवार प्रातः पीला वस्त्र धारण करें। केले के वृक्ष की पूजा करें। हल्दी मिले जल से स्नान करें।

सूर्य (षड्बल: 5.64 रूप)

पूजा: प्रतिदिन 12 बार सूर्य नमस्कार करें। रविवार को शिवलिंग पर लाल चंदन एवं जपा पुष्प अर्पित करें। 'ॐ नमो भगवते रुद्राय' मंत्र का जप करें।

दान: लाल वस्त्र, गेहूँ, गुड़, ताँबा दान करें।

सेवा: सूर्य के लिए सबसे बड़ा उपाय है कन्या के दायित्व से दबे पिता की सेवा। हमारे समाज में ऐसे कितने पिता हैं जो बेटी का विवाह करते-करते ऋणग्रस्त हो गए हैं, या बेटी के भविष्य की चिंता में रातों की नींद गँवा बैठे हैं। यदि आप ऐसे किसी परिवार को खोज सकें — जहाँ पिता बेटी के विवाह के लिए धन जुटाने में हलकान हैं — तो उस पिता के साथ खड़े होइए। चाहें तो किसी निर्धन कन्या के विवाह में आर्थिक सहायता कीजिए, या किसी कन्या की पढ़ाई का दायित्व लीजिए। एक पिता के चेहरे पर मुस्कान ला सके, तो सूर्यदेव स्वयं प्रसन्न होंगे — आपका आत्मविश्वास लौट आएगा, नेतृत्व की क्षमता जागेगी।

लाल किताब: प्रतिदिन प्रातः ताँबे के पात्र में जल लेकर सूर्य को अर्घ्य दें। स्नान के जल में गुड़ एवं लाल चंदन मिलाकर स्नान करें। नदी में ताँबे का सिक्का प्रवाहित करें।

ग्रह रत्न परामर्श (लग्नेश + पंचमेश)

लग्नेश रत्न (प्रथम) – मोती (Pearl)

ग्रह: चंद्र (लग्नेश)

धातु: चांदी | **उंगली:** तर्जनी अथवा अनामिका

धारण का दिन: सोमवार | **वजन:** 10-12 रत्ती

मंत्र: ॐ सोमाय नमः

लाभ: मानसिक शांति, मातृसुख, स्मरणशक्ति

कारण: चंद्र आपके लग्नेश हैं — देह, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के अधिपति। पराशर होराशास्त्र के अनुसार लग्नेश का रत्न सर्वोच्च प्राथमिकता रखता है। किसी भी लग्न का जातक निर्भय होकर यह रत्न धारण कर सकता है।

पंचमेश रत्न (द्वितीय) – मूंगा (Red Coral)

ग्रह: मंगल (पंचमेश)

धातु: ताँबा | **उंगली:** अनामिका

धारण का दिन: मंगलवार | **वजन:** 10-12 रत्ती

मंत्र: ॐ अं अंगारकाय नमः

लाभ: साहस, शक्ति, भूमिलाभ, उद्यम

कारण: मंगल आपके पंचमेश हैं — सर्वोत्तम त्रिकोण स्थान। पराशर होराशास्त्र के अनुसार पंचमेश का रत्न संतान, विद्या, बुद्धि एवं पुण्यकर्म की वृद्धि करता है। किसी भी स्थिति में निर्भय होकर धारण किया जा सकता है।

ॐ रत्न धारण की विधि: निर्दिष्ट दिन प्रातः स्नान करके, मंत्र का 108 बार जप करके धारण करें।

❌ निषिद्ध रत्न संयोजन (कभी एक साथ धारण न करें)

- माणिक्य + नीलम — सूर्य-शनि परम शत्रु
- माणिक्य + हीरा — सूर्य-शुक्र शत्रु
- मोती + गोमेद — चंद्र-राहु चिरविरोधी
- पुखराज + पन्ना — बृहस्पति-बुध विरोधी
- मूंगा + नीलम — मंगल-शनि शत्रु

🌌 ग्रह दुर्बलता विश्लेषण

ग्रह शांति हेतु पूजा विधान एवं उपाय

◆ बृहस्पति (अल्प दुर्बलता)

कारण: बृहस्पति अशुभ भाव (8वें) में स्थित है; बृहस्पति षड्बल में दुर्बल (5.99 रूप)

लाल किताब टोटका:

हर बृहस्पतिवार प्रातः पीला वस्त्र धारण करें। केले के वृक्ष की पूजा करें। हल्दी मिले जल से स्नान करें।

पूजा अर्चना:

बृहस्पतिवार का व्रत रखें। विष्णु पूजा करें। 'ॐ बृं बृहस्पतये नमः' मंत्र का जप करें।

★ सेवा:

बृहस्पति के लिए सबसे बड़ा उपाय है गुरु, शिक्षक, पुरोहित या धार्मिक व्यक्तियों का यथोचित सम्मान एवं सेवा। आजकल हम गुरु का मूल्य भूलते जा रहे हैं — जिस शिक्षक ने हमारे जीवन की नींव रखी, उन्हें हम याद नहीं रखते। आप अपने जीवन के किसी शिक्षक को खोजिए, उनके चरण छूड़िए, उनका आशीर्वाद लीजिए। यदि कोई पुरोहित या धार्मिक व्यक्ति अभाव में हों, तो उनकी सहायता कीजिए। किसी गुरु या शिक्षक के सम्मान में एक छोटा आयोजन कीजिए — इसी से बृहस्पति प्रसन्न होंगे। ज्ञान एवं धर्म के प्रति श्रद्धा दिखाना ही बृहस्पति का सबसे बड़ा उपाय है।

दान:

पीला वस्त्र, चने की दाल, किताबें, धार्मिक ग्रंथ दान करें।

△ सावधानी:

बृहस्पति का उपाय करते हुए कट्टरता न बरतें। सभी धर्मों एवं सभी ज्ञान के प्रति श्रद्धावान रहें।

◆ शुक्र (अल्प दुर्बलता)

कारण: शुक्र सूर्य के निकट अस्त है (7.4°); शुक्र षड्बल में कुल मिलाकर बलवान है (अनुपात 1.52), परंतु अस्त होने से अपना फल पूरा देने में बाधा पाता है — उपाय उसी बाधा के लिए है

लाल किताब टोटका:

हर शुक्रवार सफ़ेद वस्त्र धारण करें। गाय को हरी घास खिलाएँ। सुगंधित द्रव्य का प्रयोग करें।

पूजा अर्चना:

शुक्रवार का व्रत रखें। लक्ष्मी पूजा करें। 'ॐ शुं शुक्राय नमः' मंत्र का जप करें।

★ सेवा:

शुक्र के लिए सबसे बड़ा उपाय है असहाय नारी, विधवा या रुग्ण व्यक्तियों की सेवा। किसी विधवा माँ के साथ खड़े होइए — उनका घर चलाने में सहायता कीजिए। किसी रुग्ण नारी के इलाज का दायित्व लीजिए। किसी निर्धन कन्या के विवाह में सहायता कीजिए। यदि हो सके तो किसी वृद्धाश्रम में जाकर वहाँ की वृद्धा महिलाओं की देखभाल कीजिए — उनके चेहरे पर थोड़ी-सी मुस्कान लाने का प्रयास कीजिए। एक असहाय नारी के चेहरे पर मुस्कान ला सके, तो शुक्रदेव स्वयं प्रसन्न होंगे — दांपत्य जीवन सुखी होगा, संबंध मधुर होंगे, सौंदर्य एवं ऐश्वर्य जीवन में लौट आएँगे।

दान:

सफ़ेद वस्त्र, चीनी, सुगंधित द्रव्य, गाय दान करें।

△ सावधानी:

शुक्र का उपाय करते हुए भोग-विलास में आसक्त न हों। सौंदर्य केवल बाहर नहीं, भीतर भी होना चाहिए।

△ ध्यातव्य: उपाय श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ करने होंगे। फल मिलने में समय लग सकता है — धैर्य रखें।

वार्षिक वर्षफल — ताजिक पद्धति

Rudra · 2026 का वार्षिक वर्षफल

वर्ष का समग्र निर्णय: शुभ वर्ष

समग्र विचार से 2026 वर्ष आपके लिए एक शुभ वर्ष रहेगा। मुख्य कारण: वर्षेश स्वगृही (अनुकूल), 3 इथाशाल (सिद्धियोग), 3 ईशराफ (बाधायोग)।

वर्षेश फलादेश

वर्षेश: चंद्र — 10वें भाव में

इस वर्ष आपका वर्षेश दशम भाव में स्थित है — कर्म, व्यवसाय, समाज में स्थिति, यश एवं राजसम्मान का प्रतीक। दशम भाव आकाश का सर्वोच्च बिंदु है — जहाँ सूर्य मध्याह्न में स्थित होता है। इस वर्ष आपके कर्मजीवन में एक अभूतपूर्व सूर्योदय होगा।

नौकरी में पदोन्नति, वेतन वृद्धि अथवा किसी नए सम्मानजनक पद की प्राप्ति की प्रबल संभावना है — आपका व्यावसायिक जीवन एक उज्ज्वल नक्षत्र की भाँति होगा, जिसे देखकर सब मुग्ध होंगे। व्यवसायी राजकीय मर्यादा प्राप्त करेंगे — आपका प्रतिष्ठान आपके गौरव का प्रतीक बनेगा। सरकारी कार्य में सफलता मिलेगी, अधिकारीगण आपसे संतुष्ट रहेंगे।

आपके नेतृत्व गुण एवं कार्यकुशलता की चारों ओर प्रशंसा होगी — सूर्य के प्रकाश की भाँति आपका सुयश क्षितिज तक फैलेगा। किंतु स्मरण रखें — ऊँचे वृक्ष पर ही आँधी अधिक लगती है। आपकी सफलता से अनेक लोग ईर्ष्या कर सकते हैं, कोई-कोई आपके पतन की कामना भी कर सकता है। विनम्र रहकर दायित्व निभाएँ, अधीनस्थों के प्रति दयालु रहें, सहकर्मियों को श्रेय दें। वास्तविक सूर्य कभी अपनी प्रशंसा नहीं करता, वह केवल प्रकाश देता है।

वर्षेश का बल (स्वगृही): वर्षेश चंद्र स्वगृही (कर्क) — वर्ष का फल स्थिर एवं अनुकूल रहेगा।

वर्षचालिका फलादेश

मुंथा: वृश्चिक राशि में — दूसरे भाव में

मुंथा इस वर्ष आपके द्वितीय भाव में स्थित है — धन, वाणी एवं परिवार का प्रतीक। द्वितीय भाव आपके मुख की भाषा है, आपका धनकोष है, और आपके परिवार की नींव है। जब मुंथा इस भाव में आता है, तब ये तीनों क्षेत्र जीवन के केंद्रबिंदु बन जाते हैं — मानो जीवन के एक नए अध्याय का पृष्ठ पलट रहा हो।

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में स्थिरता आएगी — किंतु वह धीरे-धीरे आएगी, ठीक नदी की धारा के समान, बाढ़ के समान नहीं। कोई बड़ा निवेश अथवा जोखिमपूर्ण आर्थिक निर्णय लेने से पूर्व भली-भाँति विचार कर लें। आपके मुख की भाषा आपकी सबसे बड़ी शक्ति होगी — आपकी बात से लोग मुग्ध होंगे, आपके तर्क को मानने पर विवश होंगे। किंतु इस शक्ति की एक दुर्बलता भी है — वाणी की तीक्ष्णता संबंध न बिगाड़ दे। एक बार कही हुई बात लौटकर नहीं आती, जैसे नदी का जल फिर अपने स्रोत तक नहीं लौटता।

परिवार के सदस्यों के साथ संबंध मधुर होंगे — किंतु आहार में सावधानी आवश्यक है। मुख, दाँत अथवा गले की समस्या हो सकती है — ये छोटी-मोटी व्याधियाँ ही आपको स्मरण कराएँगी कि शरीर एक मंदिर है, उसे पवित्र रखना होता है। मुंथा आपको संचय की शिक्षा देगा — धन का मूल्य समझने और उसका सम्मान करना सीखने की शिक्षा।

पुण्य सहम: पुण्य सहम मकर राशि में (चौथे भाव में) — इस वर्ष गृह एवं सुख के क्षेत्र में सौभाग्य एवं शुभ फल विशेष रूप से प्रकट होंगे।

मुद्दा दशा — वर्ष की दशा-समयरेखा (हायनरत्न)

वर्ष-प्रवेश से लेकर वर्ष के भीतर किस समय किस ग्रह की दशा चलेगी, उसकी शास्त्रीय समयरेखा।

दशापति	आरंभ	समाप्ति	दिन
बुध	01/11/2026	22/12/2026	51.7
बुध इस वर्ष वर्षकुंडली के पहले भाव में स्थित है — इसलिए इस अवधि में मुख्यतः आत्मप्रकाश, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व से संबंधित घटनाएँ प्रधान रहेंगी। बुद्धि, व्यापार, अध्ययन एवं संचार; अनुबंध तथा हिसाब में सतर्कता रखें।			
केतु	22/12/2026	13/01/2027	21.3
केतु इस वर्ष वर्षकुंडली के 11वें भाव में स्थित है — इसलिए इस अवधि में मुख्यतः लाभ, आय, मित्र एवं आकांक्षापूर्ति से संबंधित घटनाएँ प्रधान रहेंगी। आध्यात्मिकता, अनुसंधान एवं अंतर्मुखता; विच्छेद तथा अनिश्चितता संभव है।			
शुक्र	13/01/2027	14/03/2027	60.9
शुक्र इस वर्ष वर्षकुंडली के पहले भाव में स्थित है — इसलिए इस अवधि में मुख्यतः आत्मप्रकाश, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व से संबंधित घटनाएँ प्रधान रहेंगी। प्रेम, सौंदर्य, विलास, कला एवं दांपत्य सुख; भोग-विलास में अत्यधिक व्यय न करें।			
सूर्य	14/03/2027	02/04/2027	18.3
सूर्य इस वर्ष वर्षकुंडली के पहले भाव में स्थित है — इसलिए इस अवधि में मुख्यतः आत्मप्रकाश, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व से संबंधित घटनाएँ प्रधान रहेंगी। अधिकार, सरकारी कार्य, पितृसंबंध एवं आत्मप्रकाश पर बल; स्वास्थ्य तथा अहंकार में सतर्कता रखें।			
चंद्र	02/04/2027	02/05/2027	30.4
चंद्र इस वर्ष वर्षकुंडली के 10वें भाव में स्थित है — इसलिए इस अवधि में मुख्यतः कर्म, पदमर्यादा एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से संबंधित घटनाएँ प्रधान रहेंगी। मानसिक भाव, मातृसुख, यात्रा एवं जनसंपर्क; भावनाओं के उतार-चढ़ाव में संतुलन बनाए रखें।			
मंगल	02/05/2027	23/05/2027	21.3
मंगल इस वर्ष वर्षकुंडली के 10वें भाव में स्थित है — इसलिए इस अवधि में मुख्यतः कर्म, पदमर्यादा एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से संबंधित घटनाएँ प्रधान रहेंगी। साहस, उद्यम, भूमि-संपत्ति एवं प्रतिस्पर्धा; चोट तथा जल्दबाजी से बचें।			
राहु	23/05/2027	17/07/2027	54.8
राहु इस वर्ष वर्षकुंडली के 5वें भाव में स्थित है — इसलिए इस अवधि में मुख्यतः संतान, शिक्षा, सृजनशीलता एवं प्रेम से संबंधित घटनाएँ प्रधान रहेंगी। आकस्मिक परिवर्तन, विदेश एवं प्रौद्योगिकी का योग; भ्रम तथा शॉर्टकट से दूर रहें।			
बृहस्पति	17/07/2027	04/09/2027	48.7
बृहस्पति इस वर्ष वर्षकुंडली के 11वें भाव में स्थित है — इसलिए इस अवधि में मुख्यतः लाभ, आय, मित्र एवं आकांक्षापूर्ति से संबंधित घटनाएँ प्रधान रहेंगी। ज्ञान, धर्म, शिक्षा, संतान एवं शुभकर्म; गुरुजनों की कृपा तथा सम्मान प्राप्ति का समय।			
शनि	04/09/2027	01/11/2027	57.8
शनि इस वर्ष वर्षकुंडली के छठे भाव में स्थित है — इसलिए इस अवधि में मुख्यतः शत्रुजय, प्रतिस्पर्धा, ऋण एवं स्वास्थ्य-सतर्कता से संबंधित घटनाएँ प्रधान रहेंगी। परिश्रम, धैर्य, स्थायित्व एवं दायित्व; विलंब होने पर भी अध्यवसाय से फल मिलेगा।			

ताजिक योग — वर्षकुंडली के ग्रह-संबंध

इथाशाल (शुभ मिलन — विषय सिद्ध) एवं ईशराफ (क्षय) — दीप्तांश तथा ग्रहगति के अनुसार (ताजिक नीलकंठी / B.V. Raman)।

इथाशाल · ★ वर्षेश-संबद्ध: सूर्य ↔ चंद्र

सूर्य (आत्मा, पिता, सरकार एवं पदमर्यादा) एवं चंद्र (मन, माता एवं लोकप्रियता) — इन दोनों विषयों का शुभ मिलन होगा; संबंधित कार्य इस वर्ष सिद्ध होने का प्रबल योग है।

ईशराफ · ★ वर्षेश-संबद्ध: चंद्र ↔ शुक्र

चंद्र (मन, माता एवं लोकप्रियता) एवं शुक्र (प्रेम, दांपत्य, विलास एवं कला) — संबंधित विषय में अवसर हाथ से निकलने अथवा संबंध में दूरी का संकेत; शीघ्र उद्यम आवश्यक है।

इथाशाल: सूर्य ↔ मंगल

सूर्य (आत्मा, पिता, सरकार एवं पदमर्यादा) एवं मंगल (साहस, भूमि, भाई एवं प्रतिस्पर्धा) — इन दोनों विषयों का शुभ मिलन होगा; संबंधित कार्य इस वर्ष सिद्ध होने का प्रबल योग है।

ईशराफ: सूर्य ↔ बुध

सूर्य (आत्मा, पिता, सरकार एवं पदमर्यादा) एवं बुध (बुद्धि, व्यापार, विद्या एवं संचार) — संबंधित विषय में अवसर हाथ से निकलने अथवा संबंध में दूरी का संकेत; शीघ्र उद्यम आवश्यक है।

इथाशाल: मंगल ↔ बुध

मंगल (साहस, भूमि, भाई एवं प्रतिस्पर्धा) एवं बुध (बुद्धि, व्यापार, विद्या एवं संचार) — इन दोनों विषयों का शुभ मिलन होगा; संबंधित कार्य इस वर्ष सिद्ध होने का प्रबल योग है।

ईशराफ: बृहस्पति ↔ शुक्र

बृहस्पति (ज्ञान, धन, संतान एवं शुभकर्म) एवं शुक्र (प्रेम, दांपत्य, विलास एवं कला) — संबंधित विषय में अवसर हाथ से निकलने अथवा संबंध में दूरी का संकेत; शीघ्र उद्यम आवश्यक है।



॥ सर्वे भवन्तु सुखिनः · सर्वे सन्तु निरामयाः · सर्वे भद्राणि पश्यन्तु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

◆ दशाफल एवं जीवन विश्लेषण ◆

★ बृहस्पति महादशा — विस्तृत फलादेश

मूल विषय: ज्ञान, धर्म एवं गुरु की कृपा

✓ शुभ फल

उच्च शिक्षा का अवसर, संतान-सुख, विवाह की संभावना, समाज में सम्मान

⚠ सावधानी

अत्यधिक आशावादिता, खानपान में संयम की आवश्यकता

उपाय: गुरुवार को बृहस्पति कवच का पाठ करें, गुरु का सम्मान करें

चलती अंतर्दशा: राहु — सूक्ष्म प्रभाव

शुभ: अकस्मात भाग्योदय, विदेश में कार्य का अवसर, राजनीति एवं प्रौद्योगिकी में दक्षता

सावधानी: अस्थिरता एवं भ्रम, गुप्त शत्रु, व्यसन का जोखिम

★ कर्क लग्न — स्वभाव विश्लेषण

भावुक, सेवाभावी एवं गृहप्रिय। चंद्र लग्नेश होने से मातृभक्ति एवं पारिवारिक जीवन में विशेष सुख।

जन्मकालीन पंचांग विशेषताएँ

वार शुक्रवार	नक्षत्र चित्रा	तिथि कृष्ण चतुर्दशी
योग विष्कुम्भ	करण विष्टि	गण राक्षस

◆ ग्रह शांति, प्रतिकार एवं रत्न परामर्श ◆

बृहस्पति दशा के प्रतिकार

मंत्र एवं स्तोत्र

गुरुस्तोत्र अथवा बृहस्पति कवच | ॐ
बृं बृहस्पतये नमः (१०८ बार)

दान

गुरुवार — चना दाल, पीला वस्त्र,
केला एवं पीली मिठाई

व्रत एवं सेवा

गुरुवार को ब्राह्मण अथवा गुरु को
दक्षिणा दें | मंदिर में पूजा करें

ग्रह रत्न परामर्श

लग्नेश एवं पंचमेश ग्रह के अनुसार वैदिक पद्धति से चयनित | आयु 40 वर्ष के अनुसार भार

★ लग्नेश रत्न (प्रथम) — मोती (Pearl)

चंद्र आपके लग्नेश हैं — देह, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के अधिपति। पराशर होराशास्त्र के अनुसार लग्नेश का रत्न सर्वोच्च प्राथमिकता रखता है। किसी भी लग्न का जातक निर्भय होकर यह रत्न धारण कर सकता है।

वजन: 10-12 रत्ती

धातु: चांदी

उंगली: तर्जनी अथवा अनामिका (दाहिना हाथ)

दिन: सोमवार, सूर्योदय के समय

मंत्र: ॐ सोमाय नमः (108 बार सूर्योदय पर जप करें)

✓ फल: मानसिक शांति, मातृसुख, स्मरणशक्ति

★ पंचमेश रत्न (द्वितीय) — मूंगा (Red Coral)

मंगल आपके पंचमेश हैं — सर्वोत्तम त्रिकोण स्थान। पराशर होराशास्त्र के अनुसार पंचमेश का रत्न संतान, विद्या, बुद्धि एवं पुण्यकर्म की वृद्धि करता है। किसी भी स्थिति में निर्भय होकर धारण किया जा सकता है।

वजन: 10-12 रत्ती

धातु: तांबा

उंगली: अनामिका (दाहिना हाथ)

दिन: मंगलवार, सूर्योदय के समय

मंत्र: ॐ अं अंगारकाय नमः (108 बार सूर्योदय पर जप करें)

✓ फल: साहस, शक्ति, भूमिलाभ, उद्यम

❶ निषिद्ध रत्न संयोजन – कभी एक साथ धारण न करें (पराशर होराशास्त्र)

माणिक्य + नीलम – सूर्य-शनि परम शत्रु

माणिक्य + हीरा – सूर्य-शुक्र शत्रु

मोती + गोमेद – चंद्र-राहु चिरविरोधी

पुखराज + पन्ना – बृहस्पति-बुध विरोधी

मूंगा + नीलम – मंगल-शनि शत्रु

कवच परामर्श

ग्रहों की शुभता-अशुभता एवं दोष के विचार से शास्त्रसम्मत कवच का चयन

♦ बगलामुखी कवच

अधिष्ठातृ देवता: बगलामुखी देवी (दश महाविद्याओं में अष्टम)

मंगल 7वें भाव में स्थित हैं – मांगलिक दोष विद्यमान है। इस दोष से विवाह में विलंब, दांपत्य कलह एवं संबंध-विच्छेद होता है।
बगलामुखी देवी मंगल की उग्रता शांत करके विवाह की बाधा दूर करती हैं।

धातु: सोना

दिन: मंगलवार अथवा शुक्रवार – पीले वस्त्र में पीले पुष्प के साथ

पूजा की दिशा: उत्तर मुख

बीज मंत्र: ॐ ह्रीं बगलामुख्यै नमः

✓ **फल:** मांगलिक दोष की शांति, विवाह की बाधा का निवारण, शत्रु पर विजय, मुकदमे में विजय, काले जादू से रक्षा

विशेष टिप्पणी: कवच प्राप्त करने से पूर्व अनुभवी पुरोहित या ज्योतिषी के माध्यम से शुभ मुहूर्त में प्राणप्रतिष्ठा करवा लें। हृदय के पास या बाएँ बाँह में धारण करें। कवच पहनते समय स्नान कर स्वच्छ हो लें।

रत्न धारण करने से पूर्व अनुभवी ज्योतिषी से परामर्श करें।

डॉ. प्रद्युत आचार्य • ☎ +91-93331-22768 • myastrology.in

♦ विशेष प्रतिकार ♦

कर्मजीवन की उन्नति के लिए → अपने हाथ से एक **बंदर** का चित्र बनाएँ, जिसका रंग होगा **रक्तवर्ण (लाल)**।
चित्र के नीचे अपना नाम हस्ताक्षर करें, तिथि लिखें और चित्र को रखें कार्यस्थल पर, अपने बैठने के स्थान पर।

कैसे करें

A4 आकार के एक कागज़ पर चित्र बनाएँ। चित्र स्पष्ट रूप से उसी रंग का हो — छाया या शेड देने के लिए थोड़ा अन्य रंग चल सकता है, परंतु अधिक नहीं। छपा चित्र या फ़ोन का चित्र नहीं, अपने हाथ से बनाया चित्र ही।

प्रतिकार श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ करें। यह आपके स्वयं के प्रयास एवं आवश्यक परामर्श का पूरक है — विकल्प नहीं।

डॉ. प्रद्युत आचार्य • ☎ +91-93331-22768 • myastrology.in